मई–2015 ◆ वर्ष 3 ◆ अंक 12 ◆ उदयपुर

ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

मई–२०१५

सारे कार्य सिद्ध होते हैं
जो करते पुरुषार्थ
निःश्रेयस भी प्राप्त करें
यदि त्यागें अपने स्वार्थ
ऐसे विचार लिखे हैं ऋषि ने
सत्यार्थ प्रकाश में, परमार्थ

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर–313001 (राज.)

₹१० ४१

MDH
मसाले
असली मसाले
सच-सच
DEGGI MIRCH
CHILLI POWDER
Chunky Chat masala
Chana masala
Sambhar masala
Pav Bhaji masala
Peacock Kasoori Methi
Garam masala
Kitchen King
महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड
9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली-110015
Website : www.mdhspices.com
ESTD. 1919

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ
महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.)
डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल
डॉ. महावीर मीमांसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक
अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक
भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग
नवनीत आर्य (मो.9314535379)

व्यवस्थापक
सुरेश पाटोदी (मो.9829063110)

सहयोग ◆	भारत	विदेश
संरक्षक -	११००० रु.	$ 1000
आजीवन -	१००० रु.	$ 250
पंचवर्षीय -	४०० रु.	$ 100
वार्षिक -	१०० रु.	$ 25
एक प्रति -	१० रु.	$ 5

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया मेन ब्रांच टाऊन हॉल, उदयपुर खाता संख्या : ३१०१०२०१००४१५१८ IFSC CODE- UBIN 0531014 MICR CODE- 313026001 में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत् १९६०८५३११६
ज्येष्ठ कृष्ण तृतीया
विक्रम संवत् २०७२
दयानन्दाब्द १९१

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

May- 2015

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)
कवर २ व ३ (भीतरी आवरण) रंगीन
३५०० रु.
अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	२००० रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	१००० रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	७५० रु.

स मा चा र २६

२७ ह ल च ल

०४	**वेद सुधा**
१०	गीता में श्लोकों की संख्या
१२	राणा की तलवार (कविता)
१३	**Three thousand Stitches**
१६	सत्यार्थप्रकाश पहेली-१६
१७	वैदिक वाङ्मय और विज्ञान
२०	देश का विकास एवं स्वभाषा
२२	घरेलू हिंसा बनाम अस्तित्व की लड़ाई
२८	आधुनिक संदर्भ में वानप्रस्थ आश्रम
२६	कथा सरित
३०	भोजनोपरांत न करें इनका सेवन
३०	नजरें बदली तो नजारे बदल जायेंगे

स्वामी श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - ३ अंक - १२

द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर मुद्रण

प्रकाशक
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) ३१३००१
(०२९४) २४१७६९४, ०९३१४५३५३७६, ०९८२६०६३११०
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

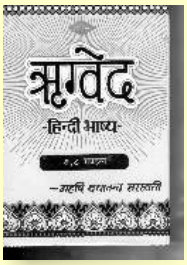

ओ३म्

वेद सुधा

ओ३म् त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्। -ऋग्वेद ७/५९/१२

अन्वयः- सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् त्र्यम्बकं [वयम्] यजामहे। उर्वारुकम् इव मृत्योः बन्धनात् मुक्षीय, अमृतात् मा।

अन्वयार्थः- (सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् त्र्यम्बकं यजामहे) सुविस्तृत पुण्यकीर्ति वाले, सुविस्तृत उत्तम यशवाले, पुण्यकर्मों की सुगन्ध से युक्त, पुष्टिवर्धक-आत्मा, शरीर एवं धन आदि विषयक पुष्टि को बढ़ानेवाले, ज्ञान-कर्म-उपासनामय तीनों वेदों के उपदेष्टा, तीनों स्थूल-सूक्ष्म-कारण शरीरों के अम्बा-अम्बक मातृ-पितृ तुल्य पालक-पोषक, तीनों लोकों के रक्षक परमेश्वर का हम यजन करते हैं, उसकी हम पूजा करते हैं, उसकी हम आत्मसमर्पणपूर्वक उपासना करते हैं।

हे प्रभो! मैं (उर्वारुकम् इव) खरबूजे के फल के समान (मृत्योः बन्धनात् मुक्षीय) मृत्यु के बन्धन से मुक्त होऊँ (अमृतात् मा) अमृत से नहीं, मोक्षानन्द से नहीं।

पुण्यकर्मों की सुगन्ध से युक्त, पुष्टिकारक रुद्र परमेश्वर की हम पूजा करते हैं। हे प्रभोः! खरबूजा जैसे पकने पर लता के बन्धन से छूट जाता है, पृथक् हो जाता है, वैसे ही मैं भी मृत्युरूप बन्धन से मुक्त हो जाऊँ, अमृत से नहीं, मोक्षानन्द से नहीं। वह प्रभु 'त्र्यम्बकं' है। ज्ञान-कर्म-उपासना रूप तीनों वेदों का उपदेष्टा हैं, तीनों लोकों का अम्बा और अम्बक अर्थात् माता-पिता के समान जनक है, उत्पादक है, पालक और पोषक है। वास्तव में जैसे जननी-जनक को, माता-पिता को अपने उत्पन्न किये हुए परिवाररूप संसार के लालन-पालन में, पालन-पोषण में, विद्या-सुशिक्षा से निर्माण करने में रुचि होती है, वही रुचि-वही नहीं वरन् उससे भी अधिक रुचि उस त्र्यम्बकं प्रभु की इस अपने उत्पन्न किये हुए संसार के पालन-पोषण में होती है। ये माता-पिता तो कभी अपने उत्पन्न किये हुए परिवारस्वरूप संसार से किन्हीं कारणोंवश निराश और हताश भी हो जाते हैं, परन्तु वह त्र्यम्बक प्रभु इतना विशाल, इतना गम्भीर, इतना उदार हृदय रखता है कि वह कभी इससे उदास नहीं होता, निराश और हताश नहीं होता। वह सुगन्धि वाला है, पुण्यकीर्ति वाला है, उत्तम पुण्य कर्मों की गन्ध-सुगन्ध कीर्ति-सुकीर्ति वाला है। उसके दिव्य उत्तम कर्मों के कारणों से सर्वत्र उसका यश फैला हुआ है। तभी तो कहा गया है, **'विष्णोः कर्माणि पश्यत'** हे मनुष्यों! तुम उस विष्णु के कर्मों को देखो। यदि हम उसकी श्रद्धा-भक्ति से उपासना करते रहेंगे तो हम भी उसके समान, ज्ञान-कर्म-उपासना के उपदेष्टा बन जायेंगे। उसकी भाँति संसार के सब मनुष्यों को सन्तान जानकर प्यार और दुलार देते रहेंगे। इस प्रकार कर्म करते हुए उस प्यारे और सब जग से न्यारे प्रभु के समान हम भी पुण्य कर्मों की सुगन्ध से

युक्त हो जायेंगे और सहज ही अपने उत्तम कर्मों की सुगन्ध से चहुँ ओर के वातावरण को सुगन्धमय, यशोमय कर सकेंगे। वह प्रभु हमारी पुष्टि को, शारीरिक, मानसिक, आत्मिक, पुष्टि-समृद्धि को सब प्रकार से बढ़ाने वाला है। ऐसे त्र्यम्बक प्रभु की हम हृदय से पूजा करते हैं। खरबूजा जैसे धरती माता से स्नेह और सूर्य से तेज पाकर पुष्ट-मिष्ट और सुगन्धित होकर अर्थात् पूर्णरूप से पककर जब अपनी महक से दिशाओं को सुगन्धित कर देता है, तब वह सहज ही अर्थात् बिना किसी आयास और प्रयास के ही लता के बन्धन से मुक्त हो जाता है, पृथक् हो जाता है। ऐसे ही हम भी वेदमाता से स्नेह और वरदान पाकर उस त्र्यम्बक प्रभु के चरणों में श्रद्धापूर्वक बैठकर आत्मसमर्पणपूर्वक जब अनन्यभाव से उसका ध्यान करेंगे तो उसके दिव्य तेजोमय प्रकाश से हम भी पककर मिष्ट-पुष्ट और सुगन्धित होकर सहज ही दिग्दिगन्त को अपनी सुगन्ध से सुगन्धमय करेंगे। फिर सहज ही हम जन्म-मरण के बन्धन से मुक्त होकर परमानन्द=मोक्ष को पा जाएँगे।

- आचार्य रामप्रसाद वेदालंकार (साभार-वैदिक पुष्पाञ्जलि)

आत्म निवेदन

समीक्षा और सदाशयता

लगभग १०-११ वर्ष पूर्व मैं पुराणों के सन्दर्भ में कुछ कार्य कर रहा था। पुराणों में विद्यमान सैंकड़ों असंभव, अप्राकृतिक व अश्लील श्लोकों में से कुछ को उद्धृत करने की आवश्यकता अनुभव कर रहा था। इसके लिए मैंने सरल रास्ता अपनाने का निश्चय किया । प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् पंडित मनसाराम 'वैदिक तोप' पुराणों के तलस्पर्शी विद्वान् थे इसमें किसी को कोई संदेह नहीं। उनकी दो पुस्तकें पुराणों पर हैं जिनमें पुराणों के अनेक श्लोक प्रमाण पते सहित उद्धृत कर पंडित जी ने अपनी बात कही है। मैंने उसी में से संदर्भों का चयन कर लिया। यह तो स्वप्न में भी नहीं सोचा जा सकता था कि पंडित जी गलत उद्धरण देंगे। कार्य के बीच में यह उत्कंठा तीव्र हुयी कि मूल पुराणों में इन संदर्भों को एक बार अवश्य देखा जाय।

न्यास के पुस्तकालय में गीताप्रेस गोरखपुर से हमने सम्पूर्ण पुराण मँगाए हुए थे। उनसे जब मिलान करने बैठे तो खोपड़ी हवा में नर्तन करने लगी, कारण पंडित मनसाराम जी की पुस्तकों में दिए गए पतों पर उद्धृत अनेक श्लोक वहाँ थे ही नहीं। बड़ा तीव्र धक्का विश्वास को लगा और निश्चय होने लगा कि प. मनसाराम जी ने गलत उद्धरण दिए हैं। पर दिल इस बात से सहमत नहीं हो रहा था कि पंडित जी जानबूझकर गलत उदाहरण क्यों देंगे और यदि उन्होंने गलत सन्दर्भ दिए थे तो पौराणिक जगत् ने उनका खंडन कर उन्हें झूठा क्यों नहीं बताया। विचार हुआ कि कहीं पुराणों के अर्वाचीन संपादकों ने उन कालिख साबित हो रहे श्लोकों को निकाल दिया हो, ऐसा तो नहीं? हमने पुराणों के पुराने संस्करण निकाल जब मिलान किया तो वहाँ वे श्लोक थे। अब बताइये हमने यदि पुराणों के पुराने संस्करणों से मिलान नहीं किया होता और यह धारणा बना ली होती कि पंडित मनसाराम जी ने अपने ग्रंथों में अशुद्ध उद्धरण दिए हैं तो क्या यह लेखक के साथ न्याय होता? संभवतः यह एक प्रकार का हमारे द्वारा कारित पाप होता। यहाँ फिर हम सोचते हैं कि अगर हमारे पास उपलब्ध पुराने संस्करणों में भी ये श्लोक नहीं होते तो क्या यह मान लेना चाहिए था कि पंडित जी ने गलत उद्धरण दिए थे? आज सोचता हूँ तो मेरा उत्तर तो नकारात्मक है। कारण इन पुराने ग्रंथों की कितनी प्रकाशित-अप्रकाशित पांडुलिपियाँ हैं यह अभी तक विद्वान् निश्चित नहीं कर सके हैं। फिर संदर्भित भाग लिखते समय लेखक के सामने कौनसा संस्करण था यह जाने बिना तथा उसी संस्करण से तुलना किये बिना लेखक के प्रति विपरीत धारणा बना लेना उसके प्रति अन्याय ही है।

उदाहरण के लिए

एक स्थान पर उद्धृत निम्न श्लोक महाभारत के आदिपर्व में गीताप्रेस गोरखपुर संस्करण में नहीं मिलता है। जबकि BORI (भण्डारकर ओरिएण्टल शोध संस्थान) के क्रिटिकल संस्करण में उपलब्ध है और श्रीपाद दामोदर सातवलेकर ने इसका अर्थ किया है।

अनावृताः किलपुरा स्त्रिय आसन् वरानने।
कामचार विहारिण्यः स्वतन्त्राश्चारूलोचने।। आदिपर्व १-११३-४

महाभारत में दीर्घतमा ऋषि से सम्बंधित पूरा एक अध्याय संभवपर्व में है पर गीता प्रेस संस्करण में सिरे से नहीं मिलता। अगर कोई लेखक इस प्रसंग को महाभारत के सन्दर्भ से उद्धृत करता है और हम गीता प्रेस संस्करण को देख घोषणा कर दें कि यह

महाभारत में है ही नहीं तो क्या यह हमारी सदाशयता होगी? कदापि नहीं। जिस ग्रन्थ की सहस्रों प्रतियाँ हों उसके सन्दर्भ में यह बात विशेष रूप से लागू होती है।

अभी बहुत समय से रामायण तथा महाभारत को लेकर कुछ कार्य करने का प्रयास कर रहे हैं तो यह निश्चय हुआ है कि इन ग्रंथों के सैंकड़ों प्रकाशित तथा अप्रकाशित संस्करणों का वर्णन विद्वानों ने किया है, इनमें से अधिकांश प्रतियाँ एक-दूसरे से हूबहू नहीं मिलतीं। इनमें श्लोकों के प्रमाण पते न मिलना तो मामूली बात है क्योंकि पर्व बदल गए हैं, काण्ड बदल गए हैं, अध्याय बदल गए हैं तो फिर प्रमाण पते क्योंकर मिल सकेंगे? महाभारत का उदाहरण देकर हम अपनी बात स्पष्ट करना

चाहेंगे। जब पूणे के भंडारकर ओरिएण्टल शोध संस्थान ने महाभारत का क्रिटिकल संस्करण निकालना चाहा तो महाभारत की ११५६ पांडुलिपियों पर उन्होंने कार्य किया। ये ११५६ ही अंतिम संख्या है यह दावा भी नहीं किया जा सकता। संख्या इनसे भी अधिक हो सकती है। इनमें दो को प्रमुख माना गया। उत्तरीय तथा दाक्षिणात्य। इन दोनों की भी कई पांडुलिपियाँ हैं। BORI संस्करण कैसे तैयार हुआ यह इस आलेख में प्रासंगिक नहीं है परन्तु मोटे तौर पर जब हम शोधकर्ताओं के प्रिय BORI संस्करण की, सर्वाधिक प्रचलित गीता प्रेस गोरखपुर संस्करण की तथा अधिक मान्यता प्राप्त दाक्षिणात्य संस्करणों की परस्पर तुलना करते हैं तो दिमाग का कचूमर बन जाता है। संकेत हेतु उदाहरण-

महाभारत सभापर्व के अध्याय २८ (गीता प्रेस) का मिलान जब अन्य दोनों संस्करणों से करते हैं तो पता चलता है कि महाराजा युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ से पूर्व अर्जुन की विजय यात्राओं से सम्बंधित दिग्विजय नामक अध्याय BORI संस्करण में २५वें अध्याय में तथा दाक्षिणात्य (कुम्भकोणम) में अध्याय २६ में मिलता है। यह भी है कि कुम्भकोणम संस्करण में इस अध्याय में ८० श्लोक हैं जबकि BORI में केवल २०। गीता प्रेस में अलग स्थिति है इसमें कुम्भकोणम से ५६ श्लोक आहरित कर लिए है पर नम्बरिंग नहीं की है इतना अवश्य उपकार किया है कि इस तथ्य का उल्लेख कर दिया है कि ५६ श्लोक दाक्षिणात्य संस्करण से लिए गए हैं। अब पाठक विचार करें कि हम अगर किसी मनीषी के ग्रन्थ में महाभारत से उद्धृत श्लोक के प्रमाण पतों की ही चर्चा करें और एक संस्करण को देखकर उन पर टिप्पणी कर गलत करार देदें तो यह उचित नहीं कहा जा सकेगा। अपनी बात को स्पष्ट करने के लिए उदाहरण प्रस्तुत करते हैं

उत्तरं हरिवर्षं तु स समासाद्य पाण्डवः।
इयेष जेतुं तं देशं पाकशासनंदनः ।।

इस श्लोक का पता दाक्षिणात्य कुम्भकोणम संस्करण में २-२६-६६ है जबकि बोरी में २-२५-७ है तथा गीता प्रेस संस्करण में नम्बरिंग ही नही की है। अब जिस लेखक की कृति में हम प्रमाण पते चेक कर रहे हैं इन सब बातों का ध्यान रखे बिना यह कार्य उत्तम रीति से कैसे करेंगे ?

ध्यान रखना होगा कि दाक्षिणात्य संस्करणों में अधिकतम १२५००० श्लोक हैं तथा उत्तरीयों में लगभग ८५००० जबकि BORI में ७५००० ही प्राप्त हैं। ऐसे में किसी लेखक ने अपनी कृति में एक ऐसा श्लोक दिया है जो कि अन्य दो में नही है और हम बिना इस बात का विचार किये लेखक की आलोचना कर देते हैं तो क्या उचित होगा? सत्य तो यह है कि हम ऐसी टिप्पणी देने के किंचित अधिकारी तब भले ही बन पाते हैं जब कम से कम ज्ञात ११५६ पांडुलिपियों में परीक्षण कर लें।

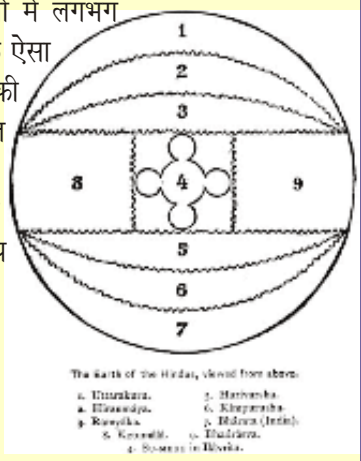

The Earth of the Hindus, viewed from above.

एक बात और दाक्षिणात्य संस्करणों में ३०-३५ सहस्र श्लोक अधिक हैं इसका तात्पर्य यह नहीं है कि उनमें का हर श्लोक उत्तरीय में मिल ही जाएगा। वस्तुस्थिति यह है कि अनेक श्लोक उत्तरीय में हैं और कुम्भकोणम में नहीं । उदाहरण-

श्वेतपर्वतमासाद्य जित्वा पर्वतवासिनः।
स श्वेतं पर्वतं राजन् समतिक्रम्य पाण्डवः।। यह गीता प्रेस में है पर कुम्भकोणम में नहीं।

शृंगवन्तं....समासाद्य पाण्डवः २-२६-६३ कुम्भकोणम संस्करण में है, परन्तु गीता प्रेस में नहीं।

किन्नरद्रुम पत्रांश्च....लेभे धनंजय २-२६-६५ दक्षिणात्य पाठ में है जबकि गीता प्रेस में नहीं।

स्पष्ट है कि किसी लेखक ने अपनी कृति में कोई ऐतिहासिक, भोगोलिक, सामाजिक या अन्य इसी प्रकार का कोई तथ्य दिया हो तो उस पर टिप्पणी करने में अत्यंत सावधानी की आवश्यकता है अन्यथा लेखक के प्रति अन्याय हो सकता है। उदाहरण के लिए कोई लेखक अपनी किसी रचना में लिखता है कि अर्जुन ने केतुमालवर्ष को विजित किया। अब यह बात महाभारत कुम्भकोणम संस्करण में तो निम्न श्लोक में स्पष्ट कही है -

तं गन्धमादनं राजन्नतिक्रम्य ततोऽर्जुनः।
केतुमालं ददर्शाथ वर्षं रत्न समन्वितम्।।
सेवितं देवकल्पैश्च नारीभिः प्रिय दर्शनैः
तं जित्वा चार्जुनो राजन् करे च विनिवेश्य च।। सभा पर्व २/२६/३६-४०

अब हम BORI संस्करण जोकि शोधार्थियों में अत्यन्त प्रसिद्ध है को देखें और कह दें कि रचनाकार द्वारा उद्धृत यह तथ्य कि

अर्जुन ने केतुमालवर्ष विजित किया था- इतिहास विरुद्ध है, तो यह प्रशस्त नहीं। महाभारत के अन्य संस्करणों में यह घटना है, और बात तो यहाँ तक है कि यह घटना इन तीनों संस्करणों में भी न हो तो भी अन्य ११५६ पांण्डुलिपियों में भी नही है ऐसा नहीं कहा जा सकता।

इसी प्रकार ऐसे श्लोकों में जो दो या तीन संस्करणों में पाए जाते हैं, यह भी देखा गया है कि उनमें परस्पर पाठान्तर मिलते हैं। अब कोई लेखक अपनी रचना में किसी एक पाठ के अनुसार श्लोकादि उद्धृत करता है और हम उसके दूसरे पाठ को देखकर यह लिखते हैं या धारणा बनाते हैं कि लेखक ने शुद्ध श्लोक नहीं लिखा तो यह भी उचित नहीं ।

हम महाभारत के सभापर्व के अध्याय २८ (कुम्भकोणम् संस्करण में २६) में पाए जाने वाले श्लोकों में, दो भिन्न संस्करणों में पाए जाने वाले पाठान्तर अपनी बात को प्रमाणित करने के लिए नीचे दे रहे हैं -

गीता प्रेस गोरखपुर संस्करण	दाक्षिणात्य पाठ कुंभकोणम् संस्करण	
सददर्श महामेरुं शिखराणां प्रभुं महत्।	सददर्श मेरुं शिखरीणाम् प्रभुं महत्।	२-२६-१६
आयतं शतसाहस्रं योजनानां तु सुस्थितम्।	उन्नतं शतसाहस्रं योजनानां तु सुस्थितम्।	२-२६-१७
नित्यपुष्पफलोपेतं सिद्धचारणसेवितम।	अप्राप्त	
मेरोरिलावृतं वर्षं सर्वतः परिमण्डलम्।।	मेरोरिलावृतं दिव्यं सर्वतः परिमण्डितिम्।।	२-२६-२२
यस्य नाम्ना त्विदं द्वीपं जम्बूद्वीपमिति श्रुतम्।।	यस्य नाम्ना त्विदं द्वीपं जम्बूद्वीपमिति स्मृतम्।।	२-२६-२३
अन्यानि च महार्हाणि तत्र लब्ध्वार्जुनस्तदा।।	वासांसि च महार्हाणि तत्र लब्ध्वार्जुनस्तदा।।	२-२६-२७
मेरुं प्रदक्षिणं कृत्वा पर्वतप्रवरं प्रभुः।	मेरुं प्रदिक्षिणीकृत्य कृत्वा पर्वतप्रवरं प्रभुः।	२-२६-२८
हैमपंका हैमजलां शुभां सौवर्णवालुकाम्।	हैमपंका हैमजलां सौवर्णोज्ज्वलवालुकाम्।	२-२६-३०
अप्राप्त	क्वचित्पुपिष्पितैः पूर्णा सौवर्ण कुसुमोत्पलै।	२-२६-३१
क्वचित् तीररुहैः कीर्णां हैमवृक्षैः सुपुष्पितैः।।	क्वचित् तीररुहैः कीर्णां हैमपुष्पैः सुपुष्पितैः।।	२-२६-३१
तीर्थैश्च रुक्मसोपानैः सर्वतः संकुलां शुभाम्।	तीर्थैश्च रुक्मसोपानैः सर्वतः समलंकुताम्।	२-२६-३२
दिव्यजाम्बूनदं हेमभूषणानि च पेशलम्।।	दिव्यजम्बूफलं हैमं भूषणानि च पेशलम्।।	२-२६-३६
नागानां रक्षितं देशमजयच्चार्जुनस्ततः।।	नागानां रक्षितं देशमजयश्च पुनस्ततः।।	२-२६-३७
केतुमालं विवेशाथ वर्षं रत्नसमन्वितम्।	केतुमालं ददर्शाथ वर्षं रत्नसमन्वितम्।	२-२६-३७
गत्वा प्राचीं दिशं राजन् सव्यसाची परंतपः।।	गत्वा प्राचीं दिशं राजन् सव्यसाची धनंजयः।।	२-२६-४२
अप्राप्त	एतान्समस्तांजित्वा च करे च विनिवेश्य च।	२-२६-४४
भद्राश्वं प्रविवेशाथ वर्षं स्वर्गोपमं शुभम्।	भद्राश्वं प्रविवेशाथ वर्षं स्वर्गोपमं शुचिम्।	२-२६-४६
अप्राप्त	तत्र देवोपमान् दिव्यान् पुरुषान् शुभसंयुतान्।	२-२६-४६
वर्षं हिरण्यकं नाम विवेशाथ महीपते।	वर्षं हिरण्वतं नाम विवेशाथ महीपते।	२-२६-५३
तं कलापधरं शूरं सरथं सानुगं प्रभुम्।	तं कलापधरं शूरं सरथं सधनुः करम्।	२-२६-५६
मणिहेमप्रबालानि रत्नान्याभरणानि च।	मणिहेमप्रबालानि शस्त्रान्याभरणानि च।	२-२६-६२
शृंगवन्तं च कौन्तेयः समतिक्रम्य फाल्गुनः।।	शृगवन्तं च कौरव्यः समतिक्रम्य फाल्गुनः।।	२-२६-६३
उत्तरं कुरुवर्षं तु स समासाद्य पाण्डवः।	उत्तरं हरिवर्षं तु स समासाद्य पाण्डवः।	२-२६-६६

पाठान्तर स्पष्ट हैं। अतः किसी की रचना में प्रचलित ग्रन्थ से तुलना करने पर अगर श्लोक यथावत् न हो तो इस संभावना से इन्कार नहीं किया जा सकता कि वह यथावत् रूप में उसी ग्रन्थ की ज्ञात-अज्ञात अन्य पांडुलिपि में हो। अतः इन सब बातों पर ध्यान दिए बिना किसी महात्मा सत्पुरुष की कृति के संदर्भ में अकारण ऐसी नुक्ताचीनी करना उचित नहीं। ऐसा करने में हमारी विद्वता का प्रदर्शन तो संभवतः हो जावे, पर सर्वज्ञानयुक्त न होने से हो सकता है हम उस महात्मा के प्रति ही नहीं अपने प्रति भी न्याय न कर रहे हों। ऐसी ही स्थिति नामों व सम्बन्धों के सन्दर्भ में देखी गयी है। महाभारत में प्रसिद्ध नाम अम्बिका के लिए कौसल्या नाम भी आता है। विदुर शान्तनु पौत्र थे पर उन्हें अत्रि पौत्र भी माना है। प्राचीन ग्रंथों के सन्दर्भ में ऐसी स्थितियाँ सर्वत्र आती हैं। सीता जनकात्मजा भी हैं, अयोनिजा भी हैं तो रावण-पुत्री भी कही गईं हैं। लेखक का सूचना स्रोत क्या था यह जानना आवश्यक है। अतः निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता कि जिस लेखक की हम जाँच पड़ताल कर रहे हैं वह सन्दर्भ लिखते समय उसके सामने ग्रन्थ की कौन-सी पांडुलिपि उपस्थित थी। अतः जिस लेखक की हम जाँच पड़ताल कर रहे हैं वह सत्यनिष्ठ है तो उस लिखे हुए तथ्य या सन्दर्भ की खोज करनी चाहिए, न कि सीमित ज्ञान के प्रकाश में विपरीत टिप्पणी। यही समीक्षा में सदाशयता कही जाती है।

- अशोक आर्य
चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०९००१३३९८३६

Why large pictorial health warnings on tobacco packages?

Bhavna B Mukhopadhyay

The Public Health Fraternity of India expresses deep shock and disappointment over the new notification issued by the Government of India on 1 April 2015, which puts on hold, the implementation of 85% pictorial health warnings on the front and back of all tobacco packages w.e.f. 1st April, 2015. We believe this was done following the recommendations of the Committee on Subordinate Legislation to the Ministry of Health and Family Welfare (MOHFW). **Some members of the Committee represent the bidi industry and therefore their opinion presents a clear case of conflict of interest.** They have requested the MOHFW to keep implementation of the Specified Health Warnings, notified vide GS.R. 727 (E) dated 15th October, 2014, in abeyance till the final report of the Committee is submitted. They have

primarily raised doubts about the link between tobacco and cancer and stated that this needs to be examined further in the context of India. It is sad that despite numerous existing studies and recent petitions and representations submitted to the Government by public health experts, national and international organizations, the MOHFW has chosen to place public health on the back burner and the revised pictorial health warnings on hold. **Hard facts about tobacco use and why it needs to be regulated**

1) The Government of India has published several evidence-based reports and studies in collaboration with other agencies, which include:

a. Report of Tobacco Control in India 2004

b. Bidi Smoking and Public Health, 2008

c. Global Adult Tobacco Survey, India 2010

All these establish the close link between tobacco and cancer as well as other tobacco-related diseases. There are several other studies available in the public domain.

2) Each day 5500 youth initiate tobacco use, 2500 Indians die daily due to tobacco-related diseases and **10 lakh Indians die annually due to diseases caused by tobacco.**

3) Economic Burden of Tobacco Related Diseases in India (2014) commissioned by Ministry of Health & Family Welfare states that the total economic costs attributable to tobacco use from all diseases in India in the year 2011 for persons aged 35-69 years **amounted to Rs.1,04,500 crores.** The total revenue from all tobacco products in the same year constituted only 17% of the estimated costs of tobacco.

Why large pictorial health warnings on tobacco packages?

- The WHO Framework Convention on Tobacco Control (WHO FCTC), a global convention enlists key evidence based strategies for reduction of demand and supply of tobacco. The Government of India ratified the WHO-Framework Convention on Tobacco Control in February 2005, and hence is legally obligated to take systematic legal, administrative and policy steps to reduce the demand and supply of tobacco. **Article 11 of the WHO FCTC calls for signatories to implement large health warnings with strong pictures as they are more effective and should be positioned on both the front and back of each product package.**

- The Cigarettes and other Tobacco products (Prohibition of Advertisement and Regulations of Trade and Commerce Production, Supply and Distribution) Act (COTPA, 2003) has been enacted by the Government of India to discourage the use of tobacco products. Section 7 and 8 of the Act, mandate depiction of specified, rotational warnings including pictorial warnings, which are legible, prominent and conspicuous.

- Graphic health warnings are very effective in

तम्बाकू और इससे युक्त पदार्थ जिस प्रकार विश्वभर में लाखों जीवन प्रतिवर्ष लील रहे हैं, यह अत्यधिक चिन्ता का विषय है। सर्वोत्तम तो यही है कि कड़े निर्णय लेकर सरकार इन पदार्थों पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगावे। मध्यावधि में अशिक्षितों को भी तम्बाकू सेवन के दुष्परिणामों के बारे में सचेत किया जावे। इस उद्देश्य से चित्रात्मक चेतावनी जितनी बड़ी हो आवश्यक है। कई देशों ने इसका आकार ४० प्रतिशत से ९० प्रतिशत तक बढ़ाकर सकारात्मक परिणाम देखे हैं। वहाँ इन पदार्थों की खपत ५० प्रतिशत से ज्यादा कम हो गयी है। स्वार्थ में अन्धे इन पदार्थों के व्यापारियों को केवल अपने लाभ की चिन्ता है अतः वे इस सम्बन्ध की निर्णयकारी समिति के सदस्य होने का अनुचित लाभ उठाते हुए बेहूदे तथा बचकाने तर्क देकर चित्रात्मक चेतावनी का आकार नहीं बढ़ने देना चाहते। प्रधानमन्त्री माननीय नरेन्द्र मोदी जी ने दखल देकर इन्हें जो फटकार लगाई व उचित निर्देश दिए हैं स्तुत्य है। इस विषय को स्पष्ट करने वाला यह आलेख सुधी-पाठकों के लाभार्थ प्रस्तुत है। लेखिका तथा NDTV का हम आभार प्रकाशित करते हैं।

– अशोक आर्य

creating awareness about the hazards of tobacco usage, especially among the youth, children, illiterate and semi-literate persons. They also encourage users to quit and prevent new users from initiating use. Picture health warnings do not affect the livelihoods of the farmers or bidi rollers. This is merely a myth created by the tobacco companies to circumvent the law and mislead policymakers and the Government.

- The current health warnings of 40% size on one side of tobacco packages are weak and ineffective. They do not communicate the desired message to users and non-users. As per Cigarette Package Health Warnings - International Status Report (2014) published by Canadian Cancer Society, **India is ranked 136, much below countries like Pakistan, Nepal, Thailand which have 85%, 90% and 85% warnings respectively.** It is to be noted that countries ranked beyond 133 have no pack warnings on tobacco packages, thus making India's status amongst the bottom 10 countries in the world. India also ranks last among other SAARC/SEARO nations who have stronger graphic health warnings. Appeal for urgent action from Government of India to review decision and implement 85% picture health warnings India has received immense support for implementation of 85% pack warnings from victims of tobacco use, doctors, cancer hospitals, national and state levels health

organizations, well-known public health experts, bidi workers unions, women and youth groups and **over 36,000 signed petitions from general public.** Some eminent MPs from across different political parties such as Ms Supriya Sule, Rajeev Chandrasekhar, PK Sreemathy, Baijayant Jay Panda, Prahlad Joshi, among others, have also written to the Health Minister, Shri JP Naddaji in favour of 85% larger pack warnings in public interest. There is immense public support for our campaign on social media **"LivesBachaoSizeBadhao"**. Article 5.3 of the WHO FCTC sets clear guidelines and recommendations for protection of public health policies with respect to tobacco control from commercial and other vested interests of the tobacco industry. It states that Parties should "Avoid conflicts of interest for government officials and employees. Clear rules regarding conflicts of interest for government officials and employees working in tobacco control are important means for protecting such policies from interference by the tobacco industry". In view of the above, therefore, we urge the Government of India not to accept the recommendations of the Committee on Subordinate Legislation as they may be biased and desist from negotiating on people's health. We appeal to the leaders of our country to stand committed to India's goal of implementing 85% pictorial health warnings on all tobacco product packages at the earliest. This will save millions of lives of the citizens of this country, who die daily due to tobacco use.

- Executive Director
Voluntary Health Association of India

नवलखा महल में नवनिर्मित ''आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा'' एवं सत्यार्थ प्रकाश स्तम्भ के बारे में दर्शकों के विचार

सबसे पहले तो मैं यहाँ के संचालक को धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने यह भव्य चित्र-प्रदर्शनी का निर्माण कर स्वामी दयानन्द सरस्वती की इस अनोखी दास्तान को अभी तक इतने अच्छे से सहेज कर रखा है। इनमें थोड़े-से में ही महर्षि दयानन्द जी के जीवन पर पूरा प्रकाश डाल दिया है जो आज की युवा पीढ़ी को बहुत आकर्षित करेगा। यहाँ आकर बहुत ही अच्छा लगा और इनके जीवन काल से प्रेरणा लेकर मैं भी इन्हीं के कदमों पर चलने की पूरी कोशिश करूँगा।

– नवदीप पहल

१६४२/३१, शास्त्री कालोनी, सोनीपत (हरियाणा), चलभाष- ९४६६४९९९१२

गीता में श्लोकों की संख्या पर विहंगम दृष्टि

महाभारत भीष्मपर्व ४३/४ के अनुसार उस काल में गीता में श्लोकों की संख्या निम्न प्रकार थीः-

षट्शतानि सविंशानि श्लोकानां प्राह केशवः।
अर्जुनः सप्तपंचाशत् सप्तषष्टि संजयः॥

श्रीकृष्ण ने ६२० श्लोक कहे, अर्जुन ने ५७ और संजय ने ६७ श्लोक कहे।

अर्थात् उस समय श्रीकृष्ण, अर्जुन और संजय ने मिलकर ७४४ श्लोक कहे।

परन्तु वर्तमान संस्करण प्रमुखतः गीता प्रेस में धृतराष्ट्र-१, श्रीकृष्ण ५७४, अर्जुन ८४ और संजय के ४१ कुल ७०० श्लोक उपलब्ध होते हैं।

इस प्रकार ४५ श्लोकों का अन्तर दृष्टिगोचर होता है।

तुलनात्मक अध्ययन करने पर पता चलता है कि अर्जुन के २७ बढ़ गए हैं जबकि श्रीकृष्ण के ४६ और संजय के २६ घट गए हैं अर्थात् दोनों के मिलाकर ७२ घटे और २७ और बढ़े जिससे घट बढ़ का अन्तर ४५ रह जाता है।

इसका तुलनात्मक चार्ट अधोलिखित हैः-

महाभारत के अनुसार थे। वर्तमान संस्करण के अनुसार हैं बढ़े घटे-

	धृतराष्ट्र	श्रीकृष्ण	अर्जुन	संजय	योग
महाभारत	-	६२०	५७	६७	७४४
वर्तमान सं.	१	५७४	८४	४१	७००
बढ़े	-	-	२७	-	-
घटे	-	४६	-	२६	-

कुल घटे ४६+२६=७२

बढ़े २७=२७

अन्तर=४५

प्रस्तुत प्रमाणों से पूर्णतः स्पष्ट है कि समय समय पर ग्रन्थों में परिवर्तन होता रहा है। अतः मूल लेखक के विचारों/कथनों में प्रक्षिप्त अंश का समावेश होना कोई आश्चर्य की बात नहीं।

स्वयं महाभारत का ही पहला रूप जय था। जो महर्षि व्यास की रचना मानी जाती है। वैशम्पायन ने उसी को बढ़ाकर भारत का नाम दिया। अन्त में सौति ने पूर्ण परिवर्धन करके इसे महाभारत बना दिया। इतिहासकारों के अनुसार व्यास के जय ग्रन्थ में ८८०० श्लोक थे। वैशम्पायन के भारत में श्लोकों की संख्या २४००० हो गई। सौति ने और भी आख्यानें, उपाख्यानों को जोड़कर १८ पर्वों में विभाजित कर उसे एक विशालकाय महाभारत का नाम दे दिया साथ ही उसमें हरिवंश पुराण नाम का एक बृहत्परिशिष्ट भी जोड़ दिया। इस प्रकार महाभारत एक लाख श्लोकों से युक्त होकर एक विशाल ग्रन्थ बन गया।

अतः गीता में भी श्लोकों का न्यूनाधिक्य होना कोई अद्भुत बात नहीं।

श्रीमद् ए.सी.भक्तिवेदान्त स्वामी प्रभुपाद द्वारा सम्पादित श्रीमद्भागवत् गीता यथारूप के प्रथम अध्याय में ४६ श्लोक ही हैं, जबकि गीता प्रेस द्वारा प्रकाशित गीता में ४७ श्लोक हैं।

इसका कारण यह है कि प्रभुपाद जी ने श्लाकों की पंक्तियों को एक दूसरे के साथ अर्थानुसार सम्बद्ध करते समय श्लोक की संख्या का क्रमांकन ठीक नहीं रखा जबकि गीता प्रेस ने भी अर्थानुसार श्लोकों को सम्बद्ध किया है परन्तु श्लोक संख्या क्रमबद्ध रखी है और वह शुद्ध है। इसके विपरीत प्रभुपाद ने इस ओर ध्यान नहीं दिया है, जिससे एक श्लोक कम हो गया है।

प्रभुपाद जी की एक बात और उललेखनीय है कि इन्होंने अध्याय १३ का पहला श्लोक कहाँ से लिया है यह ज्ञात नहीं होता अथवा यह स्वयं इनके द्वारा रचित है। अतः इस अध्याय में एक श्लोक अधिक हो गया है। गीता प्रेस की गीता में ३४ श्लोक हैं, इसके विपरीत प्रभुपाद की गीता में ३५ हैं। पहला अधिक श्लोक इस प्रकार है, जिसे प्रभुपाद ने समन्वित किया है-

प्रकृतिं पुरुषं चैव क्षेत्रं क्षेत्रज्ञमेव च।
एतद् वेदितुमिच्छामि ज्ञानं ज्ञेयं च केशव॥१३॥

यह श्लोक अर्जुन के द्वारा कहलवया गया है। इसी से आप

सुविज्ञ पाठक समझ गए होंगे कि वेद के परवर्ती ग्रन्थों में प्रक्षिप्तांशों का किस प्रकार समावेश होता रहा है।

वर्तमान संस्करण के आधार पर प्रत्येक अध्यायानुसार कथन संख्या प्रस्तुत करना भी अप्रासंगिक न होगा-

अध्याय	धृतराष्ट्र	श्रीकृष्ण	अर्जुन	संजय	योग
१	१	–	२१	२५	४७
२	–	६३	६	३	७२
३	–	४०	३	–	४३
४	–	४१	१	–	४२
५	–	२८	१	–	२९
६	–	४२	५	–	४७
७	–	३०	–	–	३०
८	–	२६	२	–	२८
९	–	३४	–	–	३४
१०	–	३५	७	–	४२
११	–	१४	३३	८	५५
१२	–	१९	१	–	२०
१३	–	३४	–	–	३४
१४	–	२६	१	–	२७
१५	–	२०	–	–	२०
१६	–	२४	–	–	२४
१७	–	२७	१	–	२८
१८	–	७१	२	५	७८
कुलयोग	१	५८४	८४	४१	७००

पंडित वेद प्रकाश शास्त्री
शास्त्री भवन, ४ ई, कैलाश नगर
फाजिल्का (पंजाब), चलभाष- ०९४६३४२८२९९

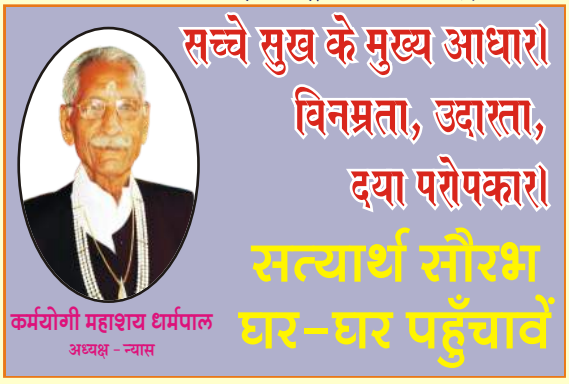

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

- **सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो।** सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु,कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके, एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है:-
- सत्यार्थप्रकाश के प्रचार हेतु कृपया निम्नानुसार सहयोग कर **लागत मूल्य से आधी कीमत में** सत्यार्थप्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ पर दिया जावेगा।

राशि	प्रतियों की संख्या	राशि	प्रतियों की संख्या
एक लाख रु.	दस हजार	७५०००	७५००
५००००	५०००	२५०००	२५००
१००००	१०००	इससे स्वल्प राशि देने वाले दानवीरों के नाम ग्रन्थ में अंकित किये जायेंगे।	

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अंतर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, उदयपुर खाता क्रमांक ३१०१०२०१००४१५१८ में जमा कर सूचित करें।

निवेदक

भवानीदास आर्य	भंवरलाल गर्ग	डॉ.अमृत लाल तापड़िया
मंत्री-न्यास	कार्यालय मंत्री	उपमंत्री-न्यास

आर्यरत्न डॉ. ओमप्रकाश(म्याँमार) स्मृति पुरस्कार

- न्यास द्वारा ONLINE TEST प्रारम्भ।
- वर्ष में तीन बार दिया जावेगा **५१०० रु.** का उपरोक्त पुरस्कार।
- आयु, लिंग, योग्यता की कोई बाधा नहीं। आबाल-वृद्ध, नर-नारी, छोटे-बड़े सभी पात्र हैं।
- विश्व भर के लोगों से इस ONLINE TEST में भाग लेने का अनुरोध।

बेवसाइट - www.satyarthprakashnyas.org

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹ ११,०००)

स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री आर.डी. गुप्त, श्री भवानी दास आर्य, श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री रतिराम शर्मा, श्री दीनदयाल गुप्त, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री नारायण लाल मित्तल, श्री सुधाकर पीयूष,श्रीमती शारदा गुप्ता, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्रीमती आभाआर्या, गुप्त दान दिल्ली, आर्यसमाज गाँधीधाम, गुप्तदान उदयपुर, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, श्री मोती लाल आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, श्री जयदेव आर्य, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती सरोज वर्मा, श्री विवेक बंसल, श्री दीपचंद आर्य, श्री एम.पी. सिंह, प्रो. आर.के.एरन, श्री खुशहालचन्द आर्य, श्री विजय तायलिया, श्री वीरेन्द्र मित्तल, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री भारतभूषण गुप्ता, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री विकास गुप्ता, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टाक, श्री नरेश कुमार राणा, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री रघुनाथ मित्तल, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव श्री लोकेश चन्द्र टांक, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ.वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरमुखी, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, कन्डा घाट (सोलन), माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली, श्री बृज वधवा, अम्बाला शहर

राणा की तलवार

चढ़ चेतक पर तलवार उठा, रखता था भूतल-पानी को।
राणा प्रताप सिर काट-काट, करता था सफल जवानी को।।
कलकल बहती थी रण-गंगा, अरि-दल को डूब नहाने को।
तलवार वीर की नाव बनी, चटपट उस पार लगाने को।।
वैरी-दल को ललकार गिरी, वह नागिन-सी फुफकार गिरी।
था शोर मौत से बचो-बचो, तलवार गिरी-तलवार गिरी।।
पैदल से हय-दल गज-दल में, छिप-छिप करती वह विकल गई!
क्षण कहाँ गई कुछ-पता न फिर, देखो चमचम वह निकल गई।।
क्षण इधर गई, क्षण उधर गई, क्षण चढ़ी बाढ़-सी उतर गई।
था प्रलय-चमकती जिधर गई, क्षण शोर हो गया किधर गई।
लहराती थी सिर काट-काट, बल खाती थी भू पाट-पाट।
बिखराती अवयव बाट-बाट, तनती थी लोहू चाट-चाट।
सेना-नायक राणा के भी, रण देख-देखकर चाह भरे।
मेवाड़-सिपाही लड़ते थे, दूने-तिगुने उत्साह भरे।।
क्षण मार दिया कर कोड़े से, रण किया उतर कर घोड़े से।
राणा रण-कौशल दिखा दिया, चढ़ गया उतर कर घोड़े से।।
क्षण भीषण हलचल मचा-मचा, राणा-कर की तलवार बढ़ी।
था शोर रक्त पीने को यह, रण-चण्डी जीभ पसार बढ़ी।।
वह हाथी-दल पर टूट पड़ा, मानो उस पर पवि छूट पड़ा।
कट गई वेग से भू, ऐसा, शोणित का नाला फूट पड़ा।।
जो साहस कर बढ़ता उसको, केवल कटाक्ष से टोक दिया।
जो वीर बना नभ-बीच फेंक, बरछे पर उसको रोक दिया।।
क्षण उछल गया अरि घोड़े पर, क्षण लड़ा सो गया घोड़े पर।
वैरी-दल से लड़ते-लड़ते, क्षण खड़ा हो गया घोड़े पर।।
क्षण भर में गिरते रुण्डों से, मदमस्त गजों के झुण्डों से,
घोड़ों से विकल वितुण्डों से, पट गई भूमि नर-मुण्डों से।।
ऐसा रण राणा करता था, पर उसको था संतोष नहीं।
क्षण-क्षण आगे बढ़ता था वह, पर कम होता था रोष नहीं।।
लड़ता अकबर सुल्तान कहाँ, वह कुल-कलंक है मान कहाँ?
राणा कहता था बार-बार, मैं करूँ शत्रु-बलिदान कहाँ?
तब तक प्रताप ने देख लिया, लड़ रहा मान था हाथी पर।
अकबर का चंचल साभिमान, उड़ता निशान था हाथी पर।।
वह विजय-मन्त्र था पढ़ा रहा, अपने दल को था बढ़ा रहा।
वह भीषण समर-भवानी को, पग-पग पर बलि था चढ़ा रहा।।
फिर रक्तदेह का उबल उठा, जल उठा क्रोध की ज्वाला से।
घोड़े से कहा बढ़ो आगे, बढ़ चलो कहा निज भाला से।।
हय-नस नस में बिजली दौड़ी, राणा का घोड़ा लहर उठा।
शत-शत बिजली की आग लिए, वह प्रलय-मेघ-सा घहर उठा।।
क्षय अमिट रोग, वह राजरोग, ज्वर सन्निपात लकवा था वह।
था शोर बचो घोड़ा-रण से, कहता हय कौन-हवा था वह।।
तनकर भाला भी बोल उठा, राणा मुझको विश्राम न दे।
बैरी का मुझसे हृदय गोभ, तू मुझे तनिक आराम न दे।।
खाकर अरि-मस्तक जीने दे, बैरी-उर-माला सीने दे।
मुझको शोणित की प्यास लगी, बढ़ने दे, शोणित पीने दे।।
मुरदों का ढेर लगा दूँ मैं, अरि-सिंहासन थहरा दूँ मैं।
राणा मुझको आज्ञा दे दे, शोणित सागर लहरा दूँ मैं।।
रंचक राणा ने देर न की, घोड़ा बढ़ आया हाथी पर।
वैरी-दल का सिर काट-काट, राणा चढ़ आया हाथी पर।।

महाराणा प्रताप जयन्ती के शुभ अवसर पर समस्त देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएँ।

श्री दीनदयाल गुप्त
''न्यासी''

साभार- अन्तर्जाल

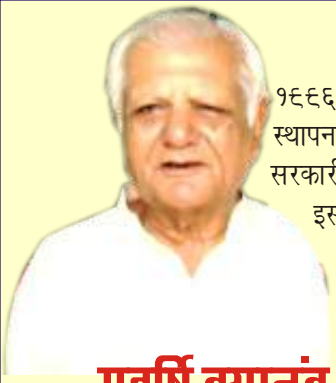

महर्षि दयानंद ने ही सर्वप्रथम घोषणा की कि नारी राष्ट्र का आधार बने

सत्यव्रत सामवेदी
इस आलेख के प्रेषक

१९९६ में इन्फोसिस फाउण्डेशन की स्थापना हुई। मुझे नॉन प्रॉफिट या गैर सरकारी संस्थान में काम कैसे होता है, इस बारे में ज्यादा जानकारी नहीं थी। मेरा अनुभव काफी सीमित था, लेकिन अब मैं एक संस्थान की ट्रस्टी थी जहाँ डोनेशन का सिस्टम था जो धर्म, भाषा, रंग, भेदभाव से दूर था। इन्फोसिस फाउंडेशन का लक्ष्य स्पष्ट था- बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय। यानी ज्यादा से ज्यादा लोगों का हित हो, वे सुखी हों।

फाउंडेशन की स्थापना के बाद सबसे पहले समस्याएँ लिखी गईं। इनमें कुपोषण, शिक्षा, दवाएँ, ग्रामीण विकास जैसी कुछ

प्रेरक संस्मरण

Three thousand Stitches

श्रीमती सुधामूर्ति

समस्याएँ शामिल थीं। मेरे दिमाग में एक समस्या प्राथमिकता पर थी कि आज भी भारत में देवदासी प्रथा है। देवदासी से अर्थ था- भगवान की सेविका। पुरातन समय में कला, संगीत या नृत्य के क्षेत्र से जुड़ी महिलाओं को देवदासी कहते थे। ये महिलाएँ मंदिरों में कला का प्रदर्शन करती थीं। उन्हें लगता था कि भगवान उनके हुनर को देखकर प्रसन्न होंगे। इन महिलाओं को समाज में सबसे ऊँचा दर्जा दिया जाता था विनापोदी नाम की एक देवदासी थी, जो राजा के बहुत करीब थी। उसने मंदिरों में काफी पैसा दान किया था। समय बदला मंदिर तबाह होने लगे। शुरू में युवतियाँ पूरी आस्था के साथ भगवान की पूजा करती थीं।

कुछ वक्त बाद देवदासियों को वेश्या समझा जाने लगा। कुछ लड़कियाँ जन्म से वेश्या थीं और कुछ अभिभावक बेटियों को किसी कारण से मंदिर में सौंप जाते थे। देवदासियाँ जिन परेशानियों से गुजरती हैं उस बारे में सोचकर कर्नाकट के येलम्मा गुड्डा की यात्रा आँखों के आगे आ जाती है। मुझे याद है कि कैसे देवदासी हरी साड़ी व चूड़ियाँ पहनकर, हल्दी पाउडर लगाकर, लंबे घने केश खोलकर भगवान का मुखौटा पहन, नारियल, नीम के पत्ते और कलश पकड़े मंदिर में आती हैं। मैंने सोचा कि क्यों न मैं इस समस्या पर काम करूँ? पर यह नहीं सोचा था कि पहले प्रोजेक्ट में इस समस्या को उठाना बहुत मुश्किल होगा।

कर्नाकट में ऐसी जगह ढूंढ़ी जहाँ धर्म की आड़ में वेश्यावृत्ति होती है। एक प्लान बनाया। सबसे पहले देवदासियों से बात करके उनकी समस्याएँ सुनी जाएँगी। फिर चर्चा होगी और जल्द ही इनका हल निकाला जायेगा। मैंने पहले दिन जीन्स, टी-शर्ट, कैप पहनी। नोटबुक व पेन पकड़ा और चल दी। न गहने पहने। न बिंदी लगाई। थोड़ी दूर चलकर मैंने कुछ देवदासियों को आपस में बात करते देखा। मैं बिना कुछ सोचे उनके पास जा पहुँची। नमस्कार किया और कहा मैं यहाँ आपकी मदद करने आई हूँ। अपनी समस्याएँ सुनाओ। मैं लिखती जाऊँगी। शायद वे देवदासियाँ किसी जरूरी विषय पर चर्चा कर रहीं थीं। मेरा बीच में आकर उन्हें बोलना अच्छा नहीं लगा था। वे मुझे गुस्से से घूरने लगीं। फिर उन्होंने सवालों की बौछार कर दी। तुम कौन हो? क्या किसी ने तुम्हें यहाँ भेजा है? यहाँ तुम हमारे बारे में लिखने आई हो? ऐसा है तो हममें से कोई भी तुमसे बात नहीं करना चाहता। तुम अफसर हो या मंत्री? अगर हम अपनी समस्याएँ सुनाएँगे तो तुम कैसे हल निकालोगी? जहाँ से आई हो वहाँ लौट जाओ। इतना सब सुनकर भी मैं वहाँ टिकी रही। मैंने फिर से बताया कि यहाँ मैं आपकी मदद करने आई हूँ। मैंने एड्स के बारे में जागरूक करने हेतु बात आगे बढ़ानी चाही। बताया कि यह बीमारी कैसे फैलती है

और इसका कोई इलाज नहीं है। उनमें से एक महिला ने फिर से मुझे जाने को कहा। मुझे लगा कि शायद थोड़ा दबाब बनाऊँगी तो वे मेरी बात सुनने लगेंगी। मैं अपनी जगह पर बनी रही। अचानक उनमें से एक महिला उठी, चप्पल उतारी और मेरे मुँह पर दे मारी। चिल्लाई और बोली कि कन्नड़ समझ नहीं आती- यहाँ से जाओ। मैंने खुद को अपमानित महसूस किया और भारी मन के साथ वहाँ से लौट आई। दिमाग में चप्पल की घटना घूम रही थी और मैंने दोबारा वहाँ न जाने का फैसला कर लिया। कुछ दिन बाद मुझे लगा कि शायद देवदासियाँ पहले से परेशान थीं। मैं गलत वक्त पर वहाँ पहुँच गई थी। यह सोचकर मैं कुछ दिन बाद दोबारा वहाँ गई। जब मैं उन देवदासियों से मिलने गई तो टमाटर पक चुके थे। देवदासियाँ टमाटर के बीच बैठी एक दूसरे को टमाटर बाँट रहीं थीं। मैं उनको देखकर मुस्कुराई और बोली- मैं सचमुच आपकी मदद करना चाहती हूँ। देवदासियाँ हँसने लगीं और कहा- कोई मदद नहीं चाहिए, पर क्या तुम टमाटर खरीदोगी? मैंने कहा- न टमाटर खाती हूँ न ही खाने में डालती हूँ।

देवदासियों ने कहा- तुम कैसी महिला हो जो टमाटर नहीं खाती हो। मैंने फिर कहा तुमने एड्स के बारे में सुना है? इसे रोकने के लिए सरकार काफी पैसा खर्च कर रही है। यह सुनकर एक देवदासी बोली- 'तुम सरकारी एजेण्ट या राजनीतिक पार्टी से हो? इस सबका तुम्हें कितना पैसा मिलेगा। यहाँ एक भी हॉस्पिटल नहीं है और तुम जानलेवा, लाइलाज बीमारियों के बारे में बता रही हो। बुरे वक्त में देवी माँ हमारी मदद करेगी।' मैं कुछ वक्त सोचने लगी कि अब क्या करना चाहिए। एक देवदासी ने दूसरी से कहा- 'यह पत्रकार होगी। तभी पैन और पेपर पकड़ा है। हमारी बुरी दशा के बारे में लिखकर पैसे कमायेगी।' यह सुनते ही देवदासियों ने मुझ पर टमाटर फेंकने शुरू कर दिये। अब की बार मैं अपनी भावनाओं को काबू में न रख पाई और रोते हुए वहाँ से लौट आई। घर आकर सोचने लगी कि इस प्रोजेक्ट पर क्यों काम करूँ? ये महिलाएँ मुझे बेइज्जत करती हैं। ऐसा कौन सा क्षेत्र हैं जहाँ जो व्यक्ति मदद करता है उसकी बेइज्जती की जाती है। मैं सोशल वर्क के लिए फिट नहीं हूँ। मुझे एकेडेमिक फील्ड में लौटा जाना चाहिए। फाउण्डेशन किसी और को ट्रस्टी बना लेगा। मैंने रेजिगनेशन लिखना शुरू कर दिया। काका (पिता को काका कहती थी) ने मुझे लिखते देखा और पूछा क्या लिख रही हो? मैंने सारी आपबीती सुनाई। मुझे लगा वे पुचकारेंगे लेकिन वे चिल्लाने लगे कि तुम इतना बेवकूफी का काम कैसे कर सकती हो? मैं गुस्से में उन्हें देखने लगी। उन्होंने फ्रीज से आइसक्रीम निकाली और कहा चुपचाप बैठो, इसे खत्म करके उठना। उन्होंने मुस्कारते हुए कहा- यह तुम्हारे दिमाग को ठण्डा करेगी। कुछ देर बाद बोले कि हमारे समाज में वेश्यावृत्ति वर्षों से है। यह लोगों के जीवन का हिस्सा बन चुकी है। इसे महिलाएँ अलग-अलग नाम से बुलाती हैं। कई राजे-महाराजे और साधु सन्तों ने इसे रोकने की कोशिश की लेकिन कोई इसे खत्म नहीं कर सका। कानून बने, सजा दी गई पर कोई फायदा नहीं हुआ। दुनिया में कोई ऐसा देश नहीं जहाँ यह

देश की प्रथम महिला इंजीनियर, सुख्यात् समाज सेविका, लेखिका, सुधामूर्त्ति प्रसिद्ध इन्फोसिस फाउन्डेशन की चेयरपर्सन हैं। अनेक प्रकार के परोपकारी कार्यों में आप अग्रणी हैं। प्रस्तुत घटना आपने अपनी पुस्तक 'Three thousand Stiches' में उल्लिखित की है। अच्छे कार्यों को करने के अपने प्रयासों को छोड़ना नहीं चाहिए, यह प्रेरणा प्रदान करने वाली घटना पाठकों के लाभार्थ प्रस्तुत है। - संपादक

प्रथा न हो फिर तुम अकेले इसे कैसे बदल सकती हो? तुम एक साधारण महिला हो। पहले छोटे लक्ष्य बनाओ। उदाहरण के लिए शुरू में आठ दस देवदासियों को वेश्यावृत्ति छोड़ने के लिए तैयार करो। उन्हें बताओं कि सामान्य जीवन जीना कैसा होता है। तुम्हारे ऐसा करने से वह अपने बच्चों को इस गंदगी में आने नहीं देंगी। खुद का लक्ष्य बनाओ, जिस दिन तुम इस लक्ष्य को हासिल करोगी, मुझे खुशी होगी कि मेरी बेटी ने ऐसी महिलाओं को सेक्स वर्कर से आत्मनिर्भर बनाया है। यह उन महिलाओं के जीवन का सबसे बड़ा बदलाव होगा। मैंने काका से कहा कि ऐसा कैसे होगा? वे देवदासियाँ चप्पल और टमाटर फैंकती हैं। काका हँसने लगे- ऐसे सोचो कि तुम्हें प्रमोशन मिला है। वे चप्पल से टमाटर पर आ गई हैं। तीसरी बार जाओगी तो और अच्छी चीज पड़ेगी।

तीसरी बार देवदासियों को मिलने से पहले मैंने खुद को पारम्परिक भारतीय नारी के अवतार में तैयार किया। बालों को पीछे की तरफ बाँधा, फूल सजाए, २०० रु. वाली साधारण साड़ी, मंगलसूत्र व चूडियाँ पहनी, बिन्दी लगाई और काका को साथ लेकर गई। देवदासियों ने काका को देखा नमस्कार किया। काका ने उन्हें बताया ये मेरी बेटी है। टीचर है, छुट्टियों में यहाँ आई है। मैंने इसे यहाँ के मुश्किल

जीवन के बारे में बताया कि कैसे बच्चों को अच्छी शिक्षा देने के लिए आप देवदासियाँ अपनी सेहत को नुकसान पहुँचा रही हैं। क्या मैंने ठीक कहा? सबने हाँ में जवाब दिया। टीचर होने के कारण यह आपके बच्चों को पढ़ाई लिखाई और नौकरी ढूँढ़ने में मदद करेगी।

काका को देखा, पहली बार बात की और मैं बड़ी बहन बन गई। काका ने आगे कहा- कुछ स्कॉलरशिप के बारे में भी बतायेंगी जिससे आपको आर्थिक मदद मिलेगी। अगर आप यह सब नहीं जानना चाहती हैं तो कोई बात नहीं हम दूसरे गाँव में चले जायेंगे। मैं काका को आगे ले कर गई और कहा आप उन्हें एड्स के बारे में क्यों नहीं बता रहे हो, यह सब बताने से क्या फायदा है। काका ने जवाब दिया- निगेटिविटी से बात शुरू करोगी तो कोई भी नहीं सुनेगा। काका द्वारा कहने के बाद देवदासियाँ मेरी बात सुनने को तैयार थीं। पहली बार उन्होंने मुझे अक्का (कन्नड़ में बड़ी बहन को कहते है) कह बुलाया। बातचीत शुरू हुई। मैंने उनके बच्चों को स्कॉलरशिप लेने में मदद की। इन देवदासियों के साथ रिश्ता बनाने में तीन वर्ष लग गये।

इतने वक्त बाद वे मुझे अपना दर्द सुनाने लगीं। हर देवदासी की अपनी अलग दर्दभरी कहानी थी लेकिन अन्त एक ही था समाज। समाज ही उनकी जिन्दगी में शर्मिंदगी भर रहा था और उन्हें इस गन्दगी से निकलने नहीं दे रहा था। मैंने देवदासियों के लिए एक संस्था बनाई। लोग जुड़ने लगे। दिल्ली से अभय कुमार आगे आये। मैंने अभय से कहा कि देवदासियों के साथ ८ माह काम करने के बाद फुल टाइम प्रोजेक्ट में शामिल करेंगे। वे ८ माह बाद लौटा और उसे इसी काम से जुड़े रखने को कहा। मेरे बहुत समझाने के बाद भी उसने एक न सुनी। मैंने स्टाइपेंड के तौर पर कुछ पैसे दिये जिन्हें उसने लेने से इन्कार कर दिया और कहा कि सिर्फ रहने को छत, दो वक्त की रोटी और स्कूटर के लिए पेट्रोल चाहिए। अभय का जुनून और हौसला देखकर उसे प्रोजेक्ट लीडर बनाया गया। देवदासियों के बच्चों को स्कूल और कुछ प्रोफेशनल कोर्स में दाखिला कराया। एड्स अवेयरनेस प्रोग्राम कराये। स्ट्रीट प्ले के माध्यम से बीमारियों

के बारे में बताया गया। लेकिन अभय और मेरे लिए जीवन आसान नहीं था। धमकियाँ मिलने लगीं। सबसे पहले अभय के लिए पुलिस प्रोटेक्शन का इन्तजाम किया गया, पर उसने यह कहकर इन्कार कर दिया कि मेरी सुरक्षा देवदासियाँ करेंगी। अब खराब से खराब परिस्थिति में भी देवदासियों ने अच्छा सोचना शुरू कर दिया था। वे इस काम से नफरत करने लगीं थीं। उन्होंने गाय-भैंस बकरियाँ रखनी शुरू कर

नारी उत्थान के लिए महर्षि दयानन्द और उनके अनुयायियों ने जो कुछ किया वह विश्व इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित है। एक बार महर्षि ने माँ-बाप द्वारा बेटियों को मंदिरों में दान देते हुए देखा। वे सारी रात रोते रहे और भोजन करने की भी उन्हें सुध नहीं रही। महर्षि निर्वाण के बाद भी यह कुप्रथा जारी रही। हम आर्य समाजों की गोष्ठियों में और सम्मेलनों में अनेक वर्षों से मंथन करते आ रहे हैं कि हमारा कार्यक्रम क्या हो परन्तु हम किसी भी निर्णय पर नहीं पहुँचते। हमें कभी ध्यान नहीं आया कि इस विकृत समाज में आज भी मंदिरों में हजारों बेटियों को दान दिया जाता है जिन्हें हम देवदासी कहते हैं। युवतियाँ होने पर ये ही देवदासियाँ व्यभिचार का शिकार हो जाती हैं और नारकीय जीवन जीने के लिए मजबूर हो जाती हैं। आर्य समाज का इस विकृति पर ध्यान ही नहीं गया परन्तु एक साहसी महिला 'सुधामूर्ति' ने देवदासियों को नारकीय यातनाओं से मुक्ति दिलाने के लिए जो त्याग और बलिदान की भावना प्रस्तुत की वह अभिनन्दनीय है। सुधामूर्ति न तो आर्य समाजी हैं और न ही दयानन्द की अनुयायी हैं परन्तु उन्होंने जो दयानन्द का काम किया है उसके लिए हम उन्हें नमन करते हैं।

- सत्यव्रत सामवेदी

दीं। हमने उनके लिए नाइट स्कूल बनाये। १२ सालों बाद कुछ महिलाएँ मेरे पास आईं और बैंक खोलने की बात कही। यह भी कहा कि अकेले ऐसा करना मुश्किल होगा। उन्हें बैंक के बारे में सही जानकारी नहीं थी। अभय और मैंने उन्हें बैंकिग के बेसिक समझाए। कुछ प्रोफेशनल्स की मदद से बैंक खोला गया। उन्हें कानूनी और एडमिनिस्ट्रेटिव सहयोग दिया गया। इस बैंक के एम्पलाइज और शेयर हॉल्डर देवदासी ही थीं। कम इन्ट्रेस्ट पर लोन मिलने लगे। तीन साल में ८० लाख रु. डिपॉजिट हुए। सबसे अच्छी बात यह थी कि अब

तक ३ हजार महिलाएँ देवदासी सिस्टम से बाहर आ चुकी थीं। बैंक की तीसरी वर्षगाँठ पर इन महिलाओं की चिट्ठी मिली। उन्होंने मुझे बैंक की तीसरी वर्षगांठ पर बुलाया था। चिट्ठी पढ़कर खुद पर काबू न रख सकी। मुझे याद है कि कैसे पहली बार चप्पल पड़ी थी और अब वह मेरे ट्रेवलिंग का खर्च उठाने को तैयार थीं। मैंने खुद के खर्च पर फंक्शन में आने का प्लान किया। फंक्शन में कोई नेता, फूल माला या स्पीच नहीं थी। साधारण आयोजन था। कुछ महिलाओं ने अपने जीवन की कहानी सुनायी। कुछ ने बताया कि उनके बच्चे अब डॉक्टर, इन्जीनियर बन चुके हैं। उन्होंने मुझे बोलने को कहा। वैसे तो मैं बहुत बोलती हूँ लेकिन उस दिन शब्द ही नहीं मिल रहे थे। पहली बार मुझे लगा जैसे भगवान से मुलाकात हुई हो। मैंने भगवान से कहा आपने मुझे बहुत कुछ दिया है। शायद मैं इस तरीके से कुछ आपको लौटा सकी हूँ। ये बच्चे आपके फूल हैं जिन्हें मैं लौटा रही हूँ। अभय वहीं था। मैंने संस्कृत का एक श्लोक सुनाया। जो दादाजी सुनाते थे- 'न महल चाहिए, न ही कोई बड़ा पद। न दोबारा जन्म लेना चाहती हूँ न ही मरकर जन्नत जाना चाहती हूँ। कुछ देना चाहते हैं तो नर्म दिल और मजबूत हाथ दें जिनसे दूसरों के आँसू पोंछ सकूँ।' यह कहकर मैं अपनी कुर्सी पर लौट आई। एक देवदासी ने मुझे एम्ब्रायडरी वाला बेडस्प्रेड तोहफे में दिया और कहा कि यह बेडस्प्रेड हमारी भावनाओं जैसा है। यह गर्मी में ठण्डा और ठण्डे में गर्म रखेगा। मुश्किल वक्त में आप हमेशा हमारे साथ थीं। यह बेडस्प्रेड मेरे जीवन का सबसे भावनात्मक तोहफा है।

साभार- आर्य नीति
आर्य समाज, राजा पार्क, जयपुर

अनेक विशेषताओं से युक्त १८८४ के मूल सत्यार्थप्रकाश के सर्वाधिक नजदीक, तत्कालीन शैली का संरक्षण, मुद्रण अशुद्धियों से रहित

सत्यार्थप्रकाश

अवश्य खरीदें।

अब मात्र आधी कीमत में ₹ ४०

३५०० रु. सैंकड़ा शीघ्र मंगवाएँ

घाटे की पूर्ति पूर्ववत् दानदाताओं के सहयोग से ही संभव होगी। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि सत्यार्थप्रकाश प्रेमी इस कार्य में आगे आवेंगे।

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर - ३१३००१

सत्यार्थ सौरभ के वर्तमान ग्राहकों के लिए रियायती योजना

आपकी सदस्यता को यदि आप पंचवर्षीय सदस्यता में परिवर्तित करते हैं तो चार सौ की बजाय केवल तीन सौ रु. भेज दें तो आपको पंचवर्षीय सदस्यता सूची में नामित कर लिया जायेगा। इसी प्रकार अगर आप आजीवन सदस्य बनना चाहते हैं तो बजाय एक हजार रु. के मात्र नौ सौ रु. प्रेषित करने का श्रम करें तो आपको आजीवन सदस्यता सूची में सम्मिलित कर लिया जायेगा।

सत्यार्थप्रकाश पहेली-१६

रिक्त स्थान भरिये- सत्यार्थप्रकाश जैसे महान् ग्रन्थ का स्वाध्याय कीजिए। (तृतीय समुल्लास पर आधारित)- पुरस्कार प्राप्त करिये

१	ती	१		२	आ		२	ष	२		आ	३	
४	दे		४	भि		४	न		५		ष्टा	५	५	री	
६	ए		६	न्त		७		को	७			८		रु	८	

संकेत (बाएँ से दाएँ) ऊपर से नीचे न भरें।

१. महर्षि दयानन्द ने अध्ययन अध्यापन विषय सत्यार्थ प्रकाश के कौन-से समुल्लास में व्याख्यायित किया है?
२. उत्तम विद्या, शिक्षा, गुण, कर्म-स्वभाव को महर्षि दयानन्द सरस्वती ने क्या संज्ञा दी है?
३. लड़कों को लड़कों की तथा लड़कियों को लड़कियों की पाठशाला में किस आयु में भेजे?
४. आभूषणों को धारण करने से क्या होता है?
५. कैसे अध्यापक स्त्री पुरुषों से शिक्षा न दिलवाये?
६. विद्या पढ़ने का स्थान कहाँ होना चाहिए?
७. लड़के तथा लड़कियों की पाठशाला में न्यूनतम दूरी कितनी होनी चाहिए?
८. लड़कों की पाठशाला में अध्यापक, भृत्य, अनुचर कौन हों?

सत्यार्थ प्रकाश पहेली- १४ का सही उत्तर

१. सज्जनों २. मिथ्या ३. दुष्टाचारी ४. कृतघ्नता ५. अविज्ञात ६. विद्या ७. नीचे ८. उपासना

सहायक ग्रन्थ- सत्यार्थप्रकाश, पुरस्कार- "अनूठी, अद्भुत पत्रिका सत्यार्थ सौरभ" एक वर्ष तक निःशुल्क, घर बैठे प्राप्त करें।

कार्यालय में हल की हुई पहेली प्राप्त करने की अन्तिम तिथि- १५ जून २०१५

आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक

वैदिक वाङ्मय और विज्ञान

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाश के ११वें समुल्लास में लिखा है कि 'जितनी विद्या भूगोल में फैली है, वह सब आर्यावर्त देश से मिश्र वालों, उनसे यूनानी, उनसे रुम और उनसे यूरोप देश में, उनसे अमेरिका आदि देशों में फैली है।' वे यह भी जानते थे कि महाभारत काल तक हमारा देश न केवल जगद्गुरु था अपितु उस समय तक आर्यों का सार्वभौम चक्रवर्ती राज्य था। भारत के चक्रवर्ती राष्ट्र वा इसके सुवर्ण भूमि होने में सर्वाधिक योगदान हमारे ज्ञान विज्ञान के अतिरिक्त वैदिक सदाचार का ही था। दुर्भाग्यवश महर्षि दयानन्द के समय तक आते-आते यह देश इतना दीन-हीन हो गया, जहाँ इसका स्वयं का राज्य भी नष्ट हो गया, आर्थिक स्थिति दयनीय हुई और ज्ञान-विज्ञान की स्थिति ऐसी हुई कि स्वयं महर्षि को विज्ञान और तकनीक के प्रशिक्षण हेतु भारतीय युवकों को जर्मन भेजने हेतु प्रोफेसर जी. वाइज से पत्र व्यवहार करना पड़ा।

जो देश कभी संसार को ज्ञान-विज्ञान की शिक्षा दिया करता था, उस देश में ही हजारों वर्ष बाद जन्मे सबसे बड़े वेदवेत्ता को इस यूरोपीय देश से शिक्षा ग्रहण करने की कामना करना भारतीय शिक्षा की दुरवस्था और असमर्थता का ही तो द्योतक है। उन्होंने अपनी 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' में, साथ ही अपने वेद भाष्य में पदे-पदे वैदिक विज्ञान के अनेक संकेत दिये हैं परन्तु हमें यह भी ज्ञात होना चाहिए कि उन संकेतों मात्र से हम संसार के समक्ष अपनी वैज्ञानिकता का दावा नहीं कर सकते और यदि हम ऐसा करते हैं तो संसार उसका उपहास ही करेगा। उस उपहास से हमें भारतीयता और वैदिक ज्ञान-विज्ञान का अपमान होता प्रतीत होगा। इस अपमान को प्रत्येक वेदभक्त वा देशभक्त अवश्य ही अनुभव करेगा। मैं ऐसे भावुक महानुभावों से निवेदन करना चाहूँगा कि किसी भी गूढ़ व गम्भीर ज्ञान-विज्ञान का प्रकाश केवल भावनाओं के बल पर नहीं हो सकता। मंच और मीडिया के माध्यम से बड़े-बड़े जोशीले भाषण व लेखों से भी यह महान् कार्य नहीं हो सकता। यदि वैदिक साहित्य के आधार पर तत्काल ही विज्ञान और तकनीक का प्रकाश हो सकता था तो महर्षि दयानन्द जी प्रो. जी. वाइज से पत्र-व्यवहार नहीं करते बल्कि स्वयं ही किसी शिष्य को तैयार करके प्राचीन ज्ञान-विज्ञान को तुरन्त प्रकाशित कर सकते थे। उनके समय में यूरोप का ज्ञान-विज्ञान इतना बढ़ा-चढ़ा नहीं था, जितना आज है। इसी कारण महर्षि ने सत्यार्थप्रकाश के ११वें समुल्लास में ही भोज प्रबन्ध में वर्णित घोड़े के आकार के यान जो भूमि व अन्तरिक्ष

दोनों में चलता था तथा एक घंटे में साढ़े सत्ताइस कोस चलता था तथा पंखे का वर्णन करते हुए कहा है 'जो ये दोनों पदार्थ आज तक बने रहते, तो यूरोपियन इतने अभिमान में न चढ़ जाते।' हम सभी जानते हैं कि वर्तमान विज्ञान इतना अधिक उन्नत हुआ है कि ये दोनों यंत्र ही उसके सम्मुख कुछ भी महत्व नहीं रखते। यद्यपि महर्षि ने अपने पूना प्रवचनों में साधारण मनुष्यों के पास भी छोटे-छोटे विमानों का होना स्वीकार किया है तथा अपने वेद भाष्य में एक ग्रह से दूसरे ग्रह तक जा सकने वाले विमानों का संकेत किया है परन्तु संकेत देना अलग बात है और विमान बनाना वा बनाने का सिद्धान्त प्रस्तुत करना अलग बात है और यही कार्य हमें प्रामाणिकता प्रदान करता है। यद्यपि हम रामायण और महाभारत में अनेक प्रकार के उन्नत अस्त्र-शस्त्रों एवं विमानों के बारे में पढ़ते हैं। महर्षि भरद्वाज की विमान विद्या के बारे में भी पढ़ते व सुनते हैं। अभी जनवरी माह में मुम्बई में आयोजित 'इण्डियन सायंस कांग्रेस' में दो विद्वानों द्वारा महर्षि भरद्वाज के विमानों की चर्चा करने से भारी विवाद उठ खड़ा हुआ था। यद्यपि यह विवाद उन वैज्ञानिकों एवं कथित प्रबुद्धों के द्वारा उत्पन्न किया गया था, जो अपनी भारतीय संस्कृति व अपने ही पूर्वजों को मूर्ख मानने और सिद्ध करने में ही अपना गौरव समझते हैं, तथापि इस विषय में मेरा मत यह भी है कि भारत के प्राचीन गौरव की चर्चा करने के लिए विज्ञान कांग्रेस उचित मंच नहीं था। ऐसे प्रवचन भारतीय प्राचीन विद्या वा इतिहास कांग्रेस जैसे मंचों पर ही पढ़े जाने

चाहिए। यदि कोई विद्वान् महर्षि भरद्वाज के विमान विद्या के रहस्यों को प्रस्तुत करता, तब यह बात विज्ञान की श्रेणी में अवश्य आती परन्तु ऐतिहासिक गौरव की गाथा विज्ञान का नहीं, इतिहास का विषय है। इस विषय में दूसरा तथ्य यह भी है कि कोई भी इतिहास जो केवल इतिहास ही बनकर रह गया है, वह कदापि किसी विज्ञान को चुनौती नहीं दे सकता। हाँ, वह वर्तमान के लिए प्रेरणा अवश्य दे सकता है परन्तु ऐसा करने के लिए भी इतिहास की प्रामाणिकता सिद्ध करना अनिवार्य है, जो सहज कार्य नहीं है। इसके विपरीत प्राचीन काल के वैज्ञानिक सिद्धान्तों को उद्घाटित करके वर्तमान विज्ञान की न्यूनताओं का अन्वेषण कर उसे दूर करने का प्रयास करके ही भारतीय वा वैदिक संस्कृति विरोधियों के अहंकार को दूर किया जा सकता है, फिर वे विरोधी भले ही भारतीय हों वा विदेशी, परन्तु यह कार्य सरल नहीं है। क्योंकि ५ हजार वर्ष से लुप्त हुए विज्ञान व उसकी परम्परा को खोजना वह भी उस स्थिति में जबकि हमारा बहुत सारा वैज्ञानिक साहित्य नष्ट वा लुप्त हो चुका है, कदापि साधारण कार्य नहीं है। महर्षि दयानन्द जी ने सत्यार्थ प्रकाश की अनुभूमिका में लिखा है- 'विज्ञान गुप्त हुए का पुनर्मिलना सहज नहीं है।'

दुर्भाग्य है कि हमारे देश में अधिकांश वेदविज्ञान अनुसंधानकर्ता केवल प्राचीन वैज्ञानिक इतिहास की गाथाएँ ही

गाते हैं। विज्ञान भारती से जुड़े अधिकांश वैज्ञानिकों को मैंने निकटता से देखा है। मैंने उनको आर्य भट्ट, वराह मिहिर, ब्रह्मगुप्त, भास्कराचार्य, चरक, सुश्रुत और नागार्जुन तक ही सीमित रहते देखा है, कहीं-कहीं महर्षि भरद्वाज और महर्षि अगस्त्य के अतिरिक्त मध्यकालीन भौतिकशास्त्रियों के बल पर हम आधुनिक नित नवीन ऊँचाइयों को स्पर्श करते हुए विज्ञान को विशेष प्रभावित नहीं कर सकते। हम केवल इतना ही कह सकते हैं कि संसार के अनेक देश जो आज विकसित हैं, उनके पूर्वजों ने हमारे पूर्वजों से ही गणित, विज्ञान, आयुर्वेद आदि की शिक्षा पायी थी। उधर महर्षि भरद्वाज और महर्षि अगस्त्य आदि का विज्ञान विस्तृत व स्पष्ट रूप हमें दृष्टिगोचर नहीं होता। यदि किसी को यह दृष्टिगोचर होता है तो उसे उस पर व्यापक अनुसंधान करके संसार को बताना चाहिए। वस्तुतः यह कार्य अति श्रम एवं समय साध्यता के साथ-साथ विशेष दैवी प्रतिभा की भी अपेक्षा रखता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जैसे बाल ब्रह्मचारी, अद्भुत प्रतिभा के धनी, योगेश्वर को भी चारों वेदों का विज्ञान समझने के लिए चार सौ वर्ष समयावधि की आवश्यकता अनुभव होती थी, ऐसा संकेत ऋग्वेद महाभाष्यम् के लेखक आचार्य विश्वश्रवा व्यास ने किया है।

मेरे जिज्ञासु आर्य बन्धुओं! जरा विचारो कि क्या हम ऋषि के साथ न्याय कर पा रहे हैं?कोई भावुक ऋषिभक्त महर्षि के वेदभाष्य को ही सर्वथा पूर्ण भाष्य समझ रहा है, तो कोई ऋषि के अन्य ग्रन्थों के बाहर कुछ सोचने की कल्पना ही नहीं कर पा रहा है, तो कोई ऋषि के ग्रन्थों को भ्रान्त व अप्रमाणिक बताकर उनमें संशोधन करके अपना पाण्डित्य प्रदर्शन कर रहा है। आज यह तो सन्तोष की बात है कि वेदभक्त-मण्डल में चाहे वे आर्य समाजी हों अथवा पौराणिक सब में 'शोध' व 'विज्ञान' जैसे शब्द गूँजते सुनाई देने लगे हैं। अपनी हर परम्परा को वैज्ञानिकता से पुष्ट करने का प्रयास करते हम विद्वानों से लेकर मंचशूर अभिनेता रूप कथावाचकों और जोशीले भावनाशील युवकों वा समाजसेवियों एवं नेताओं को देखते हैं।

इनमें से अधिकांश महानुभाव पाखण्ड और अन्धविश्वासों को भी विज्ञान की चमकीली चादर से ढकने का प्रयास करते हैं। बहुत कम महानुभाव ही तथ्यपरक बातें किया करते हैं। आज हमारे आर्यसमाज में भी कुछ बड़े विचित्र शोध हो रहे हैं और होते भी रहे हैं, जिनमें से कुछ को मैं शोध नहीं बल्कि बौद्धिक प्रदूषण मानता हूँ। हमारे अपने विद्वान् अपने जीवन के संध्याकाल में भी वेद को ऋषियों की रचना मानते हुए उन ऋषियों को मूर्ख, अनैतिक, जंगली सिद्ध करने में ही भारी श्रम कर रहे हैं। वे कथित वेद शोधकर्त्ता समस्त आर्य विद्वानों को चुनौती देते हुए प्रश्न ही प्रश्न पूछते हैं, परन्तु वे स्वयं किसी के भी प्रश्न का उत्तर देने की शिष्टता नहीं वर्त्तते और न वे किसी आर्ष ग्रन्थ को प्रमाण मानते हैं। हमारे यहाँ कुछ नामी विद्वान् जिनके कट्टर भक्त आज भी हजारों की संख्या में हैं, ब्राह्मण ग्रन्थों पर अपने शोधपरक भाष्य कर गये, जिसमें मांसाहार और पशुबलि जैसे पापों का भी प्रचुर समावेश है और विद्या और बुद्धि की बात कोई भी नहीं है। ब्राह्मण ग्रन्थों का सरल हिन्दी अनुवाद करके वे तो अमर हो गये परन्तु विद्या-विज्ञान की एक किरण भी कहीं प्रकाशित नहीं कर पाये। यह बात पृथक् है कि उन्होंने अन्य अनेक विषयों पर तार्किक और गम्भीर ग्रन्थ भी लिखे, जिनके लिए आर्यजगत् उनका ऋणी भी है। हमारे समाज में दर्शनों का भी पर्याप्त अध्ययन, लेखन, प्रचार और प्रशिक्षण हुआ व हो रहा है परन्तु अब तक योगदर्शन के कुछ सूत्रों और उनके व्यास

भाष्य को चिन्त्य और सृष्टिक्रम विरुद्ध मानकर भी कुछ विद्वान् योग निष्णात् और महान् दार्शनिक समझे जा रहे हैं। वैशेषिक दर्शन जो पदार्थ विद्या का एक महान् ग्रन्थ है उसको लेकर किसी भी शोधकर्त्ता ने वर्तमान वैज्ञानिकों के सम्मुख खड़ा होने का विचार तक नहीं किया। उपनिषदों की अनेक टीकाऐं उपलब्ध हैं परन्तु उपनिषदों में विद्यमान गम्भीर विज्ञानों का उद्घाटन किसी ने भी करने का प्रयास नहीं किया है, पुनरपि उन विद्वानों ने अपने सामर्थ्यानुसार उपनिषदों को सरल भाषा में प्रस्तुत करने का उपकार तो किया ही है। हमारे यहाँ रामायाण, महाभारत और मनुस्मृति आदि पर भी शोध किया गया, इनमें से अधिकांश विद्वानों का प्रयास प्रक्षिप्त और मूल का भेद करना मात्र रहा है न कि उनमें विद्यमान कुछ गूढ़ एवं उच्च वैज्ञानिक रहस्यों को उद्घाटित करना; जबकि ऐसा किया जाना अति आवश्यक है। गूढ़ विज्ञान को उद्घाटित किये बिना एवं वेदादि शास्त्रों की वैज्ञानिकता को समझे बिना प्राचीन इतिहास में विभिन्न बिन्दुओं की वेद एवं सृष्टि विज्ञान विरुद्धता को जाना और समझा नहीं जा सकता। इस कारण बहुत कुछ शोधन मनमाने और अवैज्ञानिक ढंग से किया गया है। इस कारण शास्त्रों की गरिमा उस स्तर को प्राप्त न कर सकी जिसकी वो वास्तव में अधिकारिणी है। हाँ, गरिमा नष्ट अवश्य होती जा रही है, जा चुकी है। अनेक प्रसंगों को प्रक्षिप्त घोषित करके निकाल दिया गया, जिससे अनेक तथ्यों का मूलसहित लोप हो गया, जो सम्पूर्ण भारत ही नहीं अपितु मानव जाति की बड़ी भारी हानि है। यह दुर्भाग्य है कि आर्य विद्वानों ने महर्षि दयानन्द के ग्रन्थों में संकेतित-वैज्ञानिक ऐतिहासिक तथ्यों को पुष्ट करने की दिशा में अपेक्षित श्रम न करके अपनी विद्वता का प्रयोग ऋषिकृत ग्रन्थों की भूलें निकालने में किया और इसी को शोध का नाम दिया। जिस ऋषि दयानन्द की आर्यभाषा (हिन्दी) पर हिन्दी के बड़े-बड़े विद्वान् समालोचक बलिहारी हुए हैं आज शोध के नाम पर इस तथ्य को ध्यान में रखे बिना कि १५० वर्ष पूर्व की हिन्दी की क्या स्थिति थी, उनके ग्रन्थों की प्रत्येक पंक्ति में गलतियाँ निकाली जा रहीं हैं। आर्यसमाज व आर्यसमाजेतर भाषा, साहित्य इतिहास व विज्ञान के तलस्पर्शी विद्वानों ने १४० वर्ष पूर्व से आज तक ऋषि-ग्रन्थों में जो गलतियाँ नहीं निकालीं थीं, वह कार्य आज आर्यसमाज के गवेषक कर रहें हैं। अगर आर्यसमाज के सभी विद्वान् इस तरफ आकर्षित हों तो उन्हें आगे १५-२० वर्ष का कार्य मिल सकता है, शोधार्थी की छाप भी लग जाएगी। कारण कि ऋषि के सभी ग्रन्थों में यहाँ तक पत्र-व्यवहार तक में इसी प्रकार की भाषा शैली है। सभी ग्रन्थों को सुधार एक-एक अशुद्धियों को प्रचारित-प्रसारित कर ऋषि-ऋण चुकाने में पीछे नहीं रहना चाहिए। हा हन्त! ऋषि के स्वप्नों के आर्यसमाज की यह दिशा। अन्यत्र कहीं भी, कोई भी व्यक्ति अपने आदर्श पुरुषों की ऐसी दुर्गति करने का स्वप्न भी नहीं देख सकता।

आर्यों! इन उपर्युक्त कथित शोधकार्यों को करते-करते आर्य समाज को १४० वर्ष व्यतीत हो रहे हैं। ऋषियों और वेदों की प्रतिष्ठा और वर्तमान विज्ञान के प्रकाश में उनकी प्रासंगिकता 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' के प्रकाश में विश्व में होना तो दूर की बात है, हमारे अपने परिवारों में भी यह सब नहीं रहा है। मैंने इस दिशा में विचार और कार्य करना प्रारम्भ किया। १० अक्टूबर २००४ से यह कार्य मैं कर रहा हूँ। मेरे सामने इन शोधकर्ता विद्वानों का मार्ग था। सायण आदि विद्वानों का भी मार्ग था। इस दिशा में मेरा कोई पथ प्रदर्शक भी नहीं था। मैंने अनेक शीर्ष आर्य विद्वानों से इस विषय में मार्गदर्शन चाहा भी था, परन्तु सबने ही इस कार्य में असमर्थता ही जताई। अन्ततः एकमात्र ईश्वर विश्वास पर और मुट्ठीभर कार्यकर्त्ताओं के सहारे अकेला ही चलने को विवश हुआ। महर्षि दयानन्दजी के ग्रन्थ कुछ टिमटिमाते हुए प्रकाश संकेत अवश्य दे रहे थे परन्तु ब्राह्मण ग्रन्थों के सर्वथा अज्ञात अन्धकार पूर्ण महासागर में उतरने के लिए कोई भी पतवार विशेष नजर नहीं आ रहा था। मैं यह भी जानता था कि ब्राह्मण ग्रन्थों को समझे बिना वैदिक ज्ञान-विज्ञान को उद्घाटित करना सर्वथा असम्भव है। जो कार्य १४० वर्ष में सम्पूर्ण आर्य और पौराणिक जगत् नहीं कर सका। करोड़ों, अरबों रुपयों का व्यय करने के उपरान्त भी वेद विज्ञान की किसी सुनिश्चित प्रणाली की एक पगडण्डी भी न बन सकी, उसे अपना 'साध्य' मान सम्पूर्णता के साथ संलग्न हूँ। ईशकृपा से यह कार्य शीघ्र सम्पादित हो जावेगा। और आगे के शोध का मार्ग प्रशस्त होगा। **क्रमशः .....**

चैत्र शुक्ला प्रतिपदा वि.सं. २०७२
शनिवार, २१ मार्च २०१५

अध्यक्ष, श्री वैदिक स्वस्ति पन्था न्यास
भीनमाल, दूरभाष-०९४१४१८२१७३

सत्यार्थ प्रकाश पहेली - १४ के विजेता

सत्यार्थ प्रकाश पहेली के संदर्भ में हमें उत्साहजनक प्रतिक्रियाएँ प्राप्त हो रही हैं। **सत्यार्थ प्रकाश पहेली- १४** के चयनित १० विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं- श्री वरुण आर्य, विजयनगर, अजमेर (राज.), श्री दिनेश कुमार बर्णवाल आर्य, वर्द्धवान (बंगाल), श्री विनीत कुमार झा, मुजफ्फरपुर (बिहार), डॉ. बृज वधवा, अम्बाला शहर (हरि.), श्री बृजेश आर्य, यमुनानगर (हरि.), श्रीमती उषा आर्या, उदयपुर (राज.), श्री ओम प्रकाश मेघवाल, बीकानेर (राज.), श्री भँवरलाल सुथार, बीकानेर (राज.), श्री पूनम चन्द सारण, बीकानेर (राज.), श्री सुरेन्द्र कुमार, पीलीभीत (उ. प्र.)। इनको स्वयं को अथवा इनके द्वारा नामित भाई/बहिन को १ वर्ष तक सत्यार्थ सौरभ पत्रिका निःशुल्क भेजी जावेगी।

जब भारत में भारतीय भाषाओं के माध्यम से शिक्षा दी जाती थी तब भारत देश सर्वाधिक विकसित था।

मैकाले ने कहा, 'भारत को यदि गुलाम बनाना है तो वहाँ की शिक्षा व्यवस्था को जब तक हम नहीं तोडेंगे, तब तक भारत गुलाम नहीं बन सकता।'

तब ब्रिटिश सरकार ने भारतीय शिक्षा अधिनियम के द्वारा संस्कृत एवं स्थानीय भाषा के द्वारा जो शिक्षा दी जाती थी, उसे गैर कानूनी घोषित कर भारतीय शिक्षा पद्धति और गुरुकुलों को तहस-नहस कर दिया और अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा पद्धति लागू कर दी।

अंग्रेजों ने भारत की शिक्षा पद्धति पर उपकार नहीं किया बल्कि भारत की समृद्ध शिक्षा पद्धति का विनाश कर दिया।

स्वतन्त्रता प्राप्त कर लेने पर इतिहासकार प्रोः धर्मपाल ने

गाँधी जी से कहा कि मेरे लिए कोई कार्य बताईएगा तब गाँधी जी ने कहाः-

'मैं १९३१ में गोलमेज सम्मेलन में लन्दन गया था, उस समय अंग्रेज अधिकारियों ने मुझसे कहा था- 'यदि अंग्रेज भारत नहीं जाते तो भारत की शिक्षा व्यवस्था कभी बन नहीं पाती। मुझे यह बात सही नहीं लगी, लेकिन मेरे पास इसका खण्डन करने का कोई प्रमाण नहीं था। मैं तुमसे उम्मीद करता हूँ कि तुम भारत की शिक्षा व्यवस्था के बारे में जितने प्रमाण सम्भव हों, इट्ठे करो और उसके आधार पर यह घोषित करो कि अंग्रेजों के आने से पहले भारत की शिक्षा व्यवस्था अच्छी थी।'

प्रोः धर्मपाल ने लन्दन, फ्रांस एवं जर्मनी आदि जाकर चालीस वर्षों तक अध्ययन एवं अध्यापन किया तथा अनेक दस्तावेज इकट्ठे किये। उनका विश्लेषण करने पर सिद्ध किया कि अंग्रेजों के आने से पहले भारत की शिक्षा बहुत ही अच्छी थी।

विलियम एडम, मैकाले के उच्च अधिकारी थे। मैकाले भारत की शिक्षा व्यवस्था के बारे में खोज करते थे, उसे विलियम एडम के लिये भेजते थे। विलियम एडम ने भारत की शिक्षा व्यवस्था पर १७८० पन्नों की रिपोर्ट तैयार करके अंग्रेजों की संसद 'हाऊस ऑफ कामन्स' में पेश किया।

२ फरवरी १८३५ को ब्रिटिश पालियामेन्ट में मैकाले ने भारतीय शिक्षा व्यवस्था पर भाषण दिया एवं सांसदों के प्रश्नों के उत्तर भी दिये, यह सभी रिकॉर्ड रूप में अभी तक सुरक्षित हैं। मैकाले ने कहा-

'मैंने पूरा भारत देखा, लेकिन भारत देश में कहीं कोई भिखारी देखने को नहीं मिला। सूरत शहर में जितनी सम्पत्ति है, उतनी यूरोप के सभी शहरों में नहीं है।

भारत में जितना भी धन-वैभव-सम्पत्ति है, वह भारत की शिक्षा व्यवस्था के कारण है।

भारत में लगभग शत-प्रतिशत साक्षरता है। दक्षिण भारत में १०० प्रतिशत है, पश्चिम भारत में ९८ प्रतिशत, उत्तर भारत में लगभग ८२ प्रतिशत, मध्य भारत में ९७ प्रतिशत साक्षरता है। मैं यह कह सकता हूँ कि लगभग सम्पूर्ण भारत साक्षर है।

भारत में सात लाख बत्तीस हजार रैवेन्यू वाले गाँव हैं। कोई गाँव ऐसा नहीं जहाँ स्कूल नहीं है। स्कूल को गुरुकुल कहा जाता है। सभी वर्गों को शिक्षा दी जाती है।

गुरुकुल में विद्या और शिक्षा दोनों प्रदान की जाती हैं। नैतिकता, आध्यात्मिकता, न्याय आदि को सिखाना विद्या है। गणित, रसायनशास्त्र, विज्ञान आदि को सिखाना शिक्षा है।

गुरुकुल में १८ विषय गणित, खगोलशास्त्र, धातु-विज्ञान, कारीगरी (इन्जीनियरिंग), रसायनशास्त्र, चिकित्सा शास्त्र आदि पढाये जाते हैं। एक विषय पूर्ण होने पर दूसरा विषय पढ़ाया जाता है।

भारत में अभी १५,८०० हायर स्टड्रीज सैन्टर अर्थात् विश्वविद्यालय हैं।'

ब्रिटेन के शिक्षा मंत्री के अनुसार भारत में अभी १०० प्रतिशत साक्षरता है। ब्रिटेन (आयरलैण्ड, स्कॉटलैण्ड और न्यू साउथ वेल्स) के समूह में १७ प्रतिशत से भी कम साक्षरता है। भारत में सात लाख बत्तीस हजार स्कूल थे तब ब्रिटेन में मात्र २७० स्कूल थे।

मैकाले ने बताया कांगड़ी विश्वविद्यालय सर्जरी शिक्षा के लिये प्रसिद्ध है, जिसे राइनोप्लास्टी कहते हैं। मैंने अपनी आँखों से देखा है, पैर के हिस्से की चमड़ी निकालकर नाक

में लगाई गयी और वह पूरी तरह २१ दिन में ठीक हो गई। पता ही नहीं चला कि कोई ऑपरेशन हुआ है। इग्लैण्ड में जब बुखार आता है और मैं डाक्टर के पास जाता हूँ तो वह हिप्पोक्रेटिक मेडिसन सिस्टम के अनुसार मेरे हाथ की नस

काट देते हैं। डाक्टर कहता है जब तक तुम्हारा दूषित खून नहीं निकलेगा तुम ठीक नहीं होगे। भारत में कुछ चूर्ण खिलाने से ही बुखार ठीक हो जाता है।

मेटलर्जी की शिक्षा गुरुकुल में दी जाती है, बिना जंग का लोहा बनाने की तकनीक भारत से ही आई है।'

विलियम एडम के दस्तावेजों के अनुसार आन्ध्र प्रदेश में कावेरी नदी के पास विशाखापट्नम से थोड़ी दूरी पर गुरुकुल है- सिविल इन्जीनियरिंग का। इस गुरुकुल के

आचार्यों और विद्यार्थियों ने मिलकर दुनिया का पहला बाँध बनाया था।

भारत में १८३५ ई. में एक एकड़ जमीन में ५६ क्विंटल चावल पैदा होता था। वर्तमान में कोई भी विश्वविद्यालय एक एकड जमीन में ३० क्विंटल से ज्यादा धान उगाने की तकनीक विकसित नहीं कर पाया।

हिन्दू समाज की आपसी सद्भावना, मित्रता, सौहार्द व एकता न होने के कारण १७ प्रतिशत साक्षर अंग्रेज १०० प्रतिशत साक्षर भारतीयों की शिक्षा व्यवस्था को तोड़कर चले गये।

भारतीय संस्कृति को अपने पूर्वजों का श्राद्ध करना चाहिए प्रणाम कर आशीर्वाद ले जीवन सुखमय कर लेना चाहिए। यहाँ मेरा प्रश्न है जो पूर्वज हमारे सुखी जीवन का सुख-चैन ले गये उनको क्या कहना चाहिए?

- मोहन लाल मगो
पाण्डव नगर, दिल्ली।

उपर्युक्त लेख में उल्लिखित तथ्यों का सम्पादक द्वारा सत्यापन नहीं किया गया है।

घरेलू हिंसा बनाम अस्तित्व की लड़ाई

आकांक्षा यादव

उत्तर प्रदेश में एक सरकारी अधिकारी ने शराब के नशे में धुत अपनी बेटी की सहेली से बदसलूकी करने का प्रयास किया और बेटी द्वारा इसका विरोध करने पर उसे जमकर मारा पीटा और सारी हदों को तोड़ते हुए अपनी बेटी के साथ ही बलात्कार कर डाला। बेटी द्वारा इसकी शिकायत करने पर आला अफसरों ने घटना की जाँच का जिम्मा आरोपित अधिकारी को ही सौंप दिया। शिकायत किये जाने से बौखलाये अधिकारी पिता ने उसके बाद अपनी बेटी के साथ कई बार बलात्कार किया। अन्ततः प्रताड़नाओं से त्रस्त आकर बेटी ने एक दूर के रिश्तेदार के संग शादी कर ली। मर्जी के खिलाफ शादी करने पर अधिकारी पिता ने उसकी ससुराल में जमकर तोड़-फोड़ की और भाड़े के लोगों द्वारा उसको ससुराल से जबरन उठवाकर अपनी अनैतिक करतूतों के गवाह बने गर्भ का गर्भपात करवा दिया। वर्ष २००१ में घटित इस घटना की रिपोर्ट राज्य महिला आयोग व अन्य संगठनों के हस्तक्षेप के बाद वर्ष २००६ में जाकर लिखी गई।

इसी प्रकार एक अन्य घटनाक्रम में जब एक गरीब छात्रा ने हाई स्कूल परीक्षा अच्छे अंकों से पास करने के बाद इण्टर में दाखिला लेना चाहा तो उसके परिजनों ने उसे डपट दिया और अन्ततः पढ़ाई जारी रखने से मना करने पर नाराज छात्रा ने रेल के सामने कूदकर अपनी जान दे दी। इसी प्रकार कुछ समय पहले विदेश में तैनात भारतीय विदेश सेवा के एक अधिकारी ने अपनी पत्नी पर हाथ उठाया और अपने बचाव में राजनयिक नियमों का सहारा लिया। कुछ साल पहले खबर आई कि महाराष्ट्र की राज्यपाल का ए.डी.सी. रहता हुआ आई.पी.एस अधिकारी अपनी आई.ए.एस. पत्नी जो कि डॉक्टर भी है से रोज शराब पीकर मारपीट करता है।

ऐसे न जाने कितने वाकए समाज में रोज घटित होते हैं और लोग उसे घरेलू-विवाद मानकर प्रकरण को वहीं समाप्त कर देना चाहते हैं। 'आम्सफैम इंडिया ट्रस्ट' के अनुसार घरेलू हिंसा नातेदारी या पारिवारिक रिश्तों में होने वाला ऐसा व्यवहार है जिससे शारीरिक, मानसिक, यौनिक या आर्थिक रूप से नुकसान पहुँचता है। आज दुनिया भर में दो तिहाई महिलाएँ घरेलू हिंसा का शिकार हैं। घरेलू हिंसा में हमेशा शारीरिक हिंसा ही नहीं होती यह बातचीत या मनोभावों द्वारा अथवा आर्थिक रूप से भी हो सकती है। कहा जाता है कि समाज में अशिक्षा के कारण महिलाओं पर हाथ उठाया जाता है और इनमें से अधिकतर मामले शराब पीकर अपनी पत्नी को मारने के आते हैं लेकिन अगर कोई सुशिक्षित ऐसी हरकत करता है तो उसे किस दृष्टिकोण से देखा जाना चाहिए? कुछ लोग यह मानते हैं कि घरेलू हिंसा का कारण स्त्री का पुरुष पर आर्थिक रूप से निर्भर होना है, पर कामकाजी महिलाएँ भी तो इसका शिकार होती हैं। विश्व में कुल कमाई का केवल पाँच फीसदी ही महिलाओं के हिस्से आता है। सम्पत्ति में हिस्सेदारी तो और भी कम है। विश्व की आधी आबादी मात्र एक प्रतिशत सम्पत्ति की ही स्वामी है। इसके आलवा नौकरियों में महिलाओं की संख्या पुरुषों के मुकाबले नगण्य ही है।

घरेलू हिंसा के मामले में एक बड़ा प्रतिशत नशे के कारण आता है। कुछ युवक अन्धे आवेग से वशीभूत खासकर शराब के नशे में छोटी बच्चियों का भी गैंगरेप कर रहे हैं। स्पेन में

ग्रेनेडा यूनिवर्सिटी के अध्ययन-नतीजे के मुताबिक दस में से छह किसी न किसी प्रकार के नशा करने वाले नशेड़ी अपने जीवनसाथी को प्रताड़ित करते हैं। शारीरिक प्रताड़ना ६.५ से २१ प्रतिशत तक रहती है जबकि भावनात्मक प्रताड़ना ७.३ से ७.२५ प्रतिशत तक रहती है। अध्ययन से यह भी पता चलता है कि ५१ प्रतिशत पुरुष नशेड़ी जानते हैं कि इस प्रकार की हिंसा से उनके साथी को आघात पहुँचता है। 'इन्टरनेशनल सेंटर फार रिसर्च ऑन वूमेन, अमेरिका' और 'इंस्टिट्यूट प्रोमुंडीन, ब्राजील' द्वारा संयुक्त रूप से किया अध्ययन बताता है कि अपनी जिन्दगी में कभी न कभी २४ फीसदी भारतीय पुरुष यौन हिंसा को अंजाम देते हैं सिर्फ १७ फीसदी भारतीय पुरुष ऐसे कहे जा सकते हैं जो समानतामूलक सम्बन्धों के हिमायती हैं। चिली, रवांडा, क्रोएशिया, ब्राजील और मैक्सिको जैसे देशों के बीच भारतीय पुरुष सबसे अधिक हिंसक कहे जा सकते हैं। यौन हिंसा को अंजाम देने वाले २४ प्रतिशत भारतीय पुरुषों के बरअक्स महज दो फीसदी ब्राजील के पुरुष या अन्य चार देशों-चिली, रवांडा, क्रोएशिया और मैक्सिको के महज ६ फीसदी पुरुष यौन हिंसा को अंजाम देते हैं। घरेलू हिंसा परिवार की आर्थिक स्थिति, व्यवसाय, धर्म, मान्यताओं, शिक्षा के स्तर या जाति के आग्रहों से परे है। घरेलू हिंसा का तात्कालिक असर भले ही सिर्फ उत्पीड़ितों पर दिखता है पर इसका दूरगामी असर वैयक्तिक सम्बन्धों के साथ-साथ पूरे परिवार, समाज व अन्ततः राष्ट्र के विकास और मानसिकता पर भी पड़ता है। परम्पराओं के नाम पर एक लोकतांत्रिक राष्ट्र में किसी भी प्रकार की हिंसा को उचित नहीं ठहराया जा सकता। यह महिलाओं के मानवाधिकार का हनन है।

भारतीय संस्कृति में नारियों के गौरव के लिए कहा गया है-

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता।

आखिर आज के तेजी से बदलते युग में इस गौरव वाक्य को किस रूप में देखा जाये? आज न जाने कितनी बेटियाँ माता-पिता का सहारा बनी हुई हैं और उनकी परवरिश कर रही हैं या बेटों के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर चल रहीं हैं। वे अपने साथ पूरे परिवार को पाल सकने की हिम्मत रखती हैं। फिर भी नारी हर रोज अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ती है। आखिर ऐसा क्या गुनाह किया है एक नारी ने जो पुरुष प्रधान समाज उसे एक पल के लिए भी आगे बढ़ता नहीं देख सकता? दुर्भाग्यवश आज भी समाज में नारी एक माँ के रूप में पूज्य, एक बहन के रूप में स्नेहिल, एक पत्नी के रूप में प्रिया, एक दोस्त के रूप में विश्वसनीय नहीं अपितु सिर्फ नारी तन है। आज अगर नारी समाज में शोषित है तो क्यों? वह हर पल ही अपने नारीत्व की परीक्षा देती रहती है। हर रोज बढ़ते बलात्कार, यौनशोषण, छेड़छाड़, अश्लील हरकतों का सामना करती हुई नारी कितनी मानसिक वेदना से गुजरती है इसकी चिन्ता कोई नहीं करता। और तो और अपने ही घर में होने वाले अत्याचार भी सहने पड़ते हैं। बकौल, कवियित्री व लेखिका अनामिका स्त्री सम्बन्धी किसी भी अपराध का नाम ले लो, स्त्री की देह वहाँ नत्थी होती ही है। मारपीट, गाली-गलौज, भ्रूण-हत्या, बलात्कार, पर्दा, दहेज-दहन, डायन-दहन, भावहीन-संभोग तरह-तरह के यौन-दोहन, सती, पोर्नोग्राफी, ट्रेफिकिंग, वेश्यावृत्ति, अनचाहा-गर्भ, सुरक्षित-प्रसव की सुविधा का अभाव, यांत्रिक नोच-खसोट के अनन्त सिलसिले झेलती स्त्री देह ज्यादातर स्त्रियों को या तो एक दुःखता हुआ घाव लगती है या फिर गले में पड़ा ढोल।' (इंडिया टुडे २ मार्च २०११)

आज नारी मानो एक वस्तु बन गई है जिसका केवल उपभोग करना है, मानो उसकी कोई भावना ही नहीं। पुरुष प्रधान समाज की सामन्ती निगाह में वह एक विवेक युक्त पशु है जिसे जब चाहे अपनी खुशियों के लिए पुरुष उपयोग करते हैं और विरोध करने पर मारपीट और प्रताड़ना। भारत में अभी भी महिलाओं को उनके कर्तव्य का पाठ पढ़ाया जाता है अधिकारों का नहीं। इसके विपरीत पुरुष अपने अधिकारों की ही बात करते हैं। नारी का स्वभावगत गुण कहें या उसका दोष कि वह पहले पिता के घर में बेटी के रूप में, शादी के बाद बच्चों के लिए माँ के रूप में सदैव ही स्व को समर्पण करती, अपने अस्तित्व को खत्म कर दूसरों को अस्तित्व प्रदान करती है, पर उसके इस योगदान को गौण बना दिया गया। नतीजतन पुरुष नारी पर हाथ उठाने को अपनी मर्दानगी दिखाने का आसान जरिया बना लेते हैं। भारतीय संस्कृति में एक ओर जहाँ नारी को पूजनीय माना गया है वहीं नगरों से लेकर ग्रामीण क्षेत्रों तक अनपढ़ से लेकर पढ़ी लिखी नारी तक, गृहिणी से लेकर कामकाजी नारी तक सभी को किसी न किसी रूप में बाहरी हिंसा के साथ-साथ घरेलू हिंसा का शिकार होना पड़ता है। जहाँ बाहरी हिंसा के मामले में कुछेक नारियों ने आगे बढ़कर आवाज उठायी वहीं घरेलू हिंसा समेत बहुत सारे अन्याय अपनी किस्मत मानकर सहती रही है। यह अनायास ही नहीं है कि लड़कियों के साथ सबसे ज्यादा छेड़छाड़ और बलात्कार उनके पारिवारिक सदस्यों और निकट रिश्तेदारों द्वारा ही होते रहे हैं। गौर करने लायक तथ्य है कि वर्ष २००४ में बलात्कार की कुल एक लाख पचहत्तर हजार घटनाएँ हुईं पर उनमें से मात्र अट्ठारह हजार घटनाएँ दर्ज की गईं। ऐसे ही एक मामले में सुप्रीम कोर्ट के एक जज का बयान गौरतलब है- देश में बलात्कार के लगभग ८० प्रतिशत मामलों में सबूतों के अभाव, धीमी पुलिस जाँच इत्यादि के चलते अभियुक्तों को सजा नहीं मिल पाती है। इसके अलावा बहुत सी महिलाएँ ऐसी

घटनाओं की रिपोर्ट भी कराने से कतराती हैं क्योंकि उनमें ऐसी घटनाओं को छुपाने की प्रवृत्ति होती है। आखिर इससे उनका और उनके परिवार का सम्मान जुड़ा होता है।' शायद इन्हीं परिस्थितियों में केन्द्रीय मंत्रिमंडल ने हाल ही में एक ऐसे विधेयक को मंजूरी दी है, जिसमें महिलाओं के साथ बलात्कार के मुकदमों की सुनवाई सिर्फ महिला जजों से कराने का प्रावधान है। यही नहीं भारत में सालभर में २६०००० बेटियाँ कोख में ही मार दी जाती हैं और इसके लिए बाकायदा लगभग ४५० करोड़ रुपये का भ्रूण हत्या का कारोबार चल रहा है।

महिलाओं को संवैधानिक तथा कानूनी सुरक्षा प्रदान करने के लिए जनवरी १६५२ में राष्ट्रीय महिला आयोग की स्थापना की गई। साथ ही हर राज्य में महिला आयोग का भी गठन किया गया। इसके अलावा कई गैर सरकारी संस्थाओं, स्वयं सेवी संगठनों के प्रतिनिधियों का भी सहयोग लिया गया क्योंकि यह महसूस किया गया कि केवल सरकारी प्रयासों से नारी समस्याओं को हल नहीं किया जा सकता। ये गैर सरकारी संस्थाएँ लोक जागृति लाने का महत्वपूर्ण कार्य करती हैं और महिलाओं के शक्तिवर्द्धन करने में सहायक सिद्ध हुई हैं। २६ अक्टूबर २००६ को घरेलू हिंसा निषेध कानून २००५ के बाद यह आशा की गई कि पुरुष अहम से वशीभूत होकर बात-बात पर महिलाओं और बच्चों पर अपना गुस्सा उतारने वालों की खैर नहीं है। 'मैके चली जाऊँगी तुम देखते रहियो', अब पुरानी बात हो जायेगी और महिलायें पतियों से तंग आकर अपने माता-पिता के पास नहीं वरन् नजदीकी थाने में रिपोर्ट दर्ज कराती नजर आयेंगी। गौरतलब है कि इस कानून के तहत महिलाओं के खिलाफ घरेलू हिंसा को व्यापक अर्थों में लेते हुए यौनसम्बन्धी, शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, भावनात्मक के साथ-साथ मौखिक प्रताड़ना को भी शामिल किया गया और घरेलू हिंसा को पाँच वर्गों में बाँटकर उसे और भी स्पष्ट कर दिया गया।

शारीरिक हिंसा–मारपीट, थप्पड़, ठोकर मारना, दाँत काटना, लात मारना, मुक्का मारना, धक्का देना, धकेलना और अन्य तरीके से शारीरिक तकलीफ देना।

लैंगिक हिंसा– जबरदस्ती यौन सम्बन्ध बनाना, अश्लील साहित्य या कोई अन्य अश्लील तस्वीरें या सामग्री को देखने के लिए मजबूर करना, किसी दूसरे का मन बहलाने के लिए मजबूर करना, दुर्व्यवहार करना, अपमानित करना या नीचा दिखाने के लिए लैंगिक प्रकृति का कोई दूसरा कर्म जो महिलाओं के सम्मान को किसी न किसी रूप में चोट पहुँचाता हो, बालकों के साथ यौनिक दुर्व्यवहार।

मौखिक और भावनात्मक हिंसा– मजाक उड़ाना, गालियाँ देना, चरित्र और आचरण पर दोषारोपण, लड़का न होने के लिए बेइज्जत करना, बच्चा न होने पर ताना देना, दहेज के सवाल पर अपमानित करना, स्कूल, कॉलेज या किसी अन्य शैक्षणिक संस्थान में जाने से रोकना, नौकरी करने से रोकना, नौकरी छोड़ने के लिए मजबूर करना, महिला या उसके साथ रहने वाले किसी बच्चे/बच्ची को घर से जाने से रोकना, किसी व्यक्ति विशेष से मिलने से रोकना, इच्छा के खिलाफ शादी करने पर मजबूर करना, पसन्द के व्यक्ति से शादी करने के लिए रोकना, आत्महत्या करने की धमकी देना। कोई और मौखिक या भावनात्मक दुर्व्यवहार।

अहिंसक हिंसा– महिला या महिला की संतानों को भरण-पोषण के लिए पैसा नहीं देना, महिला या उसकी संतानों को खाना, कपड़ा और दवाइयाँ जैसी चीजें मुहैया न कराना, जिस घर में महिला रह रही है उससे निकलने पर मजबूर करना, घर के किसी हिस्से में जाने या किसी हिस्से के इस्तेमाल से रोकना, रोजगार करने से रोकना, किसी रोजगार को अपनाने में बाधा पहुँचाना, महिला के वेतन या पारिश्रमिक को जबरदस्ती हड़प लेना, कपड़े या दूसरी रोजमर्रा के घरेलू इस्तेमाल की चीजों के प्रयोग से रोकना, अगर किराए के मकान में रह रही हो तो किराया न देना, बिना महिला की सूचना और सहमति के स्त्रीधन या अन्य मूल्यवान वस्तुओं को बेच देना या बंधक रखना, स्त्रीधन को खर्च कर देना, बिजली आदि जैसे अन्य बिलों का भुगतान न करना।

दहेज से जुड़ा उत्पीड़न– दहेज के लिए किसी भी प्रकार की माँग, दहेज से जुड़े किसी अन्य उत्पीड़न में शामिल रहना।

इस कानून की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह हर उस महिला पर लागू होगा जो किसी घर के दायरे में रहती है, भले ही वह किसी भी धर्म की हो। यही नहीं बिना विवाह के साथ रहने वाली महिला, विधवा और बहनों को भी इस कानून के दायरे में लिया गया है। नियम कायदों के उल्लंघन को संज्ञेय और गैर जमानती अपराध माना गया है एवं दोषी पाये जाने पर एक साल की सजा या २० हजार रु. जुर्माना या फिर दोनों सजायें हो सकती हैं। पत्नी और बच्चों को जीवन निर्वाह के लिए धन न देने की स्थिति में अधिनियम की धारा १८ के तहत पत्नी अपने स्त्री धन, गहने जेवर और कपड़ों को कब्जे में ले सकेगी। साथ ही ऐसी स्थिति में बिना कोर्ट की इजाजत के संयुक्त बैंक खातों और बैंक लॉकर का भी उपयोग नहीं किया जा सकता। अधिनियम की धारा १६ के तहत महिलाओं और बच्चों को घर में रहने से रोका नहीं जा सकता और न ही ऐसे घरों को बेचा जा सकता

है। किराये का मकान होने पर उसी तरह की सुविधाओं से युक्त दूसरा मकान दिलाना भी बाध्यकारी है। इस कानून के उचित क्रियान्वयन के लिए जिलों में महिला संरक्षण अधिकारी की नियुक्ति का प्रावधान भी सुनिश्चित किया गया है।

यद्यपि हर कानून के दुरुपयोग की संभावनाएँ रहती हैं पर अन्ततः उसका परिवार उसके क्रियान्वयन पर निर्भर करता है। निश्चितः इस कानून के लागू होने के बाद एक लोकतांत्रिक व सभ्य समाज की भाँति महिलाओं को घरों के अंदर भी वैधानिक तौर पर कुछ अधिकार मिले हैं। यह सही है कि जिस समाज में नारी पूजनीय रही है वहाँ कानून का भय दिखाना उचित नहीं कहा जा सकता पर हम इस तथ्य की अवहेलना भी नहीं कर सकते कि समाज में एक ऐसा वर्ग भी है जो घरेलू महिलाओं व बच्चों को अपनी जागीर समझ परम्पराओं का हवाला देते हुए उनका शोषण करता है और इस सम्बन्ध में कोई कानून न होने पर वह अपनी हदें पार भी कर जाता है। यह सही है कि घरेलू पारिवारिक झगड़ों को सुलझाने के लिए मेल-जोल व सद्भाव को आधार बनाया जाना चाहिए पर अन्ततः हिंसा, भले ही वह पिता या पति द्वारा हो एक सभ्य समाज की निशानी नहीं कहा जा सकता। यहाँ सहज सवाल उठना स्वाभाविक है कि कहीं पुरुष समाज अपने वर्चस्व को बनाये रखने के लिए इन सब कृत्यों को तो नहीं करता है? पर वे यह बात भूल जाते हैं कि नारी धैर्यशील है, सहनशील होती है, स्व को समाप्त करके रिश्तों को सहेजती है लेकिन उसकी भी एक सीमा है। अगर ये सीमा टूटी तो पुरुष प्रधान समाज को भरभराने में तनिक भी समय नहीं लगेगा।

सत्य यही है कि माँ, पत्नी, बेटी के रूप में अगर नारी न हो तो समाज केवल पशुवत् हो जायेगा। प्रत्येक युग में नारी ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। अपने विशिष्ट गुणों के कारण आधुनिक युग में हर क्षेत्र में कठोरतम् सामाजिक प्रतिबन्धों और विपरीत परिस्थितियों में भी नारी अपना रास्ता खोजकर आगे बढ़ती जा रही है। यह हमारे समाज के मानस पटल पर जरूर अंकित होने चाहिए कि ईश्वर ने नारी की संरचना ही इस प्रकार की है कि संसार के भविष्य की वो स्वयं ही निर्मात्री हो गई। दुनिया में जो भी युगपुरुष हुए हैं वे नारी के किसी न किसी रूप में चाहे वो माँ, बहन, पत्नी, भाभी अथवा दाई रही हो की छाया में ही पल्लवित पुष्पित व प्रभावित होकर महान् बने हैं। माँ के रूप में नारी ही बच्चों को संस्कार, भले-बुरे का बोध कराती है। जीवन संगिनी के रूप में नारी अपने धर्म का निर्वहन करती है। अगर वह सब रिश्तों को निभाने के लिए शांत रहती है तो इसका मतलब यह कदापि नहीं कि वह कमजोर है। घरेलू हिंसा अधिनियम, सार्वजनिक जगहों पर यौन उत्पीड़न इत्यादि के विरुद्ध तमाम नियम कानून के होने एवं महिला आयोग तथा महिला व बाल विकास मंत्रालय जैसी संस्थाएँ होने के बावजूद सुशिक्षित समाज में यदि यह सब घटित हो रहा है तो जरूर समाज में कहीं न कहीं विसंगति है। पुरुष सम्बन्धों को लैंगिक चश्मे से देखते हैं और इसी कारण महिलाओं पर हिंसा करने से नहीं हिचकते। ऐसे में सवाल उठना वाजिब भी है कि अगर पुरुष इतने सब के बावजूद अपनी पुरुषवादी सामन्तवादी मानसिकता नहीं बदल पा रहा है तो आखिर नारी अपनी उपस्थिति घर और कार्यस्थल में किस तरह दर्ज करे? एक सवाल यह भी है कि ऐसी स्थिति आयी ही क्यों? क्या इसके पीछे नारियों का अतिसहनशील स्वभाव तो नहीं? तो क्या नारियों को भी इस दिशा में गौर करना चाहिए। कहा जाता है कि परिवर्तन प्रकृति का नियम है, कहीं इसकी दरकार नारियों को तो नहीं। एक विद्वान् लेखिका के शब्द गौरतलब हैं कि 'ज्यों-ज्यों हमारा लोकतांत्रिक समाज वयस्क होता जायेगा त्यों-त्यों महिलाओं समेत हाशिए में खड़े सभी वर्गों के अधिकारों और हितों पर समवेत चिन्तन और समाज के कई घूसर इलाकों के नियमन को नाजुक कानून बनाना जरूरी बनता जायेगा। इस प्रक्रिया में कई परम्पराएँ टूटेंगी या पुनर्व्याख्यायित होंगी।'

टाईप-५, निदेशक बंगला,जीपीओ कैम्पस
सिविल लाइन्स, इलाहबाद उत्तरप्रदेश २११००१

सत्यार्थप्रकाश अब उपलब्ध

सभी सत्यार्थप्रकाश प्रेमियों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि सत्यार्थप्रकाश का स्टॉक समाप्त होने जाने के कारण अनेक सज्जनों के आदेश पर सत्यार्थप्रकाश प्रेषित नहीं कर पा रहे थे। अब सत्यार्थप्रकाश उपलब्ध है। अतः सभी को उनके आदेशानुसार सत्यार्थप्रकाश शीघ्र प्रेषित कर दिया जावेगा। सत्यार्थप्रकाश पूर्वानुसार ३५०० रु. सैकड़ा ही दिया जावेगा। (स्टॉक रहने तक)

- सुरेश पाटोदी (व्यवस्थापक, न्यास)

समाचार

पं. वेदप्रिय शास्त्री का नया मोबाइल नम्बर

पं श्री वेदप्रिय शास्त्री, महर्षि दयानन्द साधु आश्रम, सीतावाड़ी, केलवाड़ा का नया मोबाइल नम्बर ०७६६५७६५११३ है। कार्यक्रम आमंत्रण हेतु कृपया उपर्युक्त नम्बर पर सम्पर्क करें।

आर्य समाज स्थापना दिवस मनाया गया

नव संवत्सर २०७२ के अवसर पर आर्य समाज महर्षि दयानन्द मार्ग, बीकानेर में संभाग की सभी आर्य समाजों ने मिलकर आर्य समाज स्थापना दिवस उल्लासपूर्वक मनाया। इस अवसर पर बीकानेर के महापौर श्री नारायण चोपड़ा ने अपने सम्बोधन में यज्ञ को सर्वश्रेष्ठ कर्म बताते हुए कहा कि यज्ञ संगठित होकर कार्य करने की प्रेरणा देता है। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए स्वामी सत्यानन्द जी ने पर्व की महत्ता पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर सर्वश्री उदयशंकर व्यास, कृष्ण लाल आर्य, भजनोपदेशक श्री वल्लभ आर्य, छत्तीसगढ़ ने भी अपने उद्बोधन प्रदान किए। श्री रामगोपाल, दशरथ शर्मा, मोहित सोनी ने भजन प्रस्तुत किए। इस अवसर पर श्री रामेश्वर लाल आर्य, श्री कृष्ण राम चौधरी, रामी देवी दम्पति तथा श्रीमती बगला देवी आर्य का उनके द्वारा आर्य समाज के लिए किए गए कार्यों के लिए अभिनन्दन पत्र, शॉल ओढ़ाकर व नारियल भेंट कर अभिनन्दन किया गया। कार्यक्रम का संचालन करते हुए मंत्री श्री महेश सोनी ने कहा कि आर्य समाज की स्थापना के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए तन-मन-धन से समर्पित भाव से कार्य करना चाहिए।

- महेश सोनी

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के आगामी कार्यक्रम

१. स्वामी दीक्षानन्द स्मृति दिवस समारोह का आयोजन १५ मई २०१५ को प्रातः १० बजे से गुरुकुल चोटीपुरा, रजबपुर, अमरोहा में किया जा रहा है जिसके लिए आर्य समाज प्रशान्त विहार, दिल्ली से विशेष बसें चलेंगी।

- संपर्क-सुदेश भगत, ९८६८६६१६८०

२. आर्य बालिका चरित्र निर्माण शिविर-१७ से २४ मई २०१५

- संयोजक अनिता कुमार, ०९२१२६४५५२२

३. आर्य युवक चरित्र निर्माण शिविर-६ जून से १४ जून २०१५ तक एमिटी इन्टरनेशनल स्कूल सेक्टर ४४ नोएडा,

सम्पर्क सौरभ गुप्ता ९९७१४६७९७८

निर्वाचन सम्पन्न

आर्य समाज, पिछोली, उदयपुर के वार्षिक निर्वाचन दिनांक १३ अप्रेल २०१५ को चुनाव अधिकारी श्री धीरज अरोड़ा के निर्देशन में सम्पन्न हुए। श्री सुरेश चन्द्र चौहान, श्री सत्यप्रिय आर्य एवं श्री यशवन्त श्रीमाली को क्रमशः प्रधान, मंत्री व कोषाध्यक्ष का दायित्व सौंपा गया। सभी पदाधिकारियों को सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से बधाई व शुभकामनाएँ।

जन चेतना यात्रा

कन्या भ्रूण हत्या, नशाखोरी, पाखण्ड, अन्धविश्वास, बढ़ती अश्लीलता के विरुद्ध जन-जागरण हेतु वैदिक विरक्त मंडल के तत्वावधान में आर्य समाज के प्रसिद्ध साधु-सन्तों की जन चेतना यात्रा १६ अप्रैल २०१५ को दिल्ली में पहुँची। जहाँ केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के सैंकड़ों सदस्यों ने यात्रा का भव्य स्वागत किया।

सामवेद पारायण महायज्ञ

श्री हीरालाल शर्मा, छोटी सादड़ी द्वारा दिनांक २४ से २७ मई २०१५ तक अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् डॉ. सोमदेव शास्त्री के ब्रह्मत्व में दयानन्द वाटिका (श्री ओंकार माध्यमिक विद्यालय) छोटीसादड़ी में सामवेद पारायण महायज्ञ का आयोजन किया जा रहा है। जिसमें प्रसिद्ध भजनोपदेशक पंडित नरेश दत्त, आचार्य मोक्षराज (अजमेर), डॉ. सीमा श्रीमाली (चित्तौड़गढ़) तथा स्वामी श्रद्धानन्द भी भाग लेंगे।

एक वर्षीय सघन साधना शिविर

दर्शन योग महाविद्यालय आर्यवन, रोजड़ में १ अक्टूबर २०१४ को एक वर्षीय सघन साधना शिविर आरम्भ किया गया था। १ फरवरी को इस प्रकल्प को चार माह पूरे हो गए। साधकवृन्द शरीर व मन से सुख-शान्ति व स्वास्थ्य का लाभ ग्रहण करते हुए अपनी आध्यात्मिक उन्नति के शिखर पर समारुढ़ हो रहे हैं। आन्तरिक दोषों में न्यूनता देखकर उनके मन में उत्साह व प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है। इस प्रकार इस पूरे वर्ष के शिविर में साधकवृन्द सकारात्मक परिणामों की अनुभूति कर सकेंगे यह निश्चय है।

- स्वामी ब्रह्मविदानन्द सरस्वती, शिविराध्यक्ष

सघन वेद प्रचार

सर्वविदित है कि झाबुआ वनवासी जिला है और यहाँ ईसाई मिशनरियों का जाल बिछा हुआ है। मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के दो प्रचारक विगत तीस वर्षों से अधिक समय से इस क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं। गत पाँच सात वर्षों से रतलाम की दोनों आर्य समाजों के सहयोग से तीन प्रचारक कार्य कर रहे हैं जिसके फलस्वरूप आदिवासी भाईयों में चेतना जागृत हुई। रतलाम के जागरूक कार्यकर्ता श्री राजेन्द्र बाबू गुप्त व प्रचारक वरसिंह के द्वारा झाबुआ जिले के ग्राम अन्तरबेलिया में प्रथम बार यज्ञशाला का निर्माण कराया गया। जिसका लोकार्पण दिनांक १५ मार्च को सार्वदेशिक एवं प्रान्तीय सभा के महामंत्री श्री प्रकाश आर्य के कर कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ। सभी लोगों का सहयोग प्राप्त कर संन्यासी व उपदेशकों के लिए एक कक्ष निर्माण करने की भी योजना है।

- भगवान दास अग्रवाल, उपप्रधान, मध्य भारतीय आ. प्र. स.

दान सहायता शिविर एवं वेद प्रचार कार्यक्रम

गुरुकुल हरिपुर के तत्वावधान में २७ व २८ फरवरी २०१५ को नुवागुड़ा, बाइलगुड़ा व अण्डारगुड़ा को केन्द्र बनाकर दान सहायता शिविर एवं प्रचार कार्यक्रम किया गया। विभिन्न ग्रामों के दो हजार महानुभावों को आर्य समाज एवं वेद से परिचित कराया गया। १० परिवारों को वैदिक धर्म में दीक्षित कर सैंकड़ों महानुभावों को यज्ञ में आहुति दिलवाकर मांस मदिरा आदि अभक्ष्य पदार्थों को त्याग देने का व्रत दिलाया गया। सम्पूर्ण कार्यक्रम गुरुकुल हरिपुर के संचालक डॉ. सुदर्शन देव आचार्य के मार्गदर्शन व प्रेरणा से श्री विजय कुमार लाहोटी (रायपुर), समाजसेवी श्री सोमनाथ पात्र बालेश्वर की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ।

आर्य समाज स्थापना दिवस मनाया

आर्य समाज, शाहपुरा जिला भीलवाड़ा में आर्य समाज स्थापना दिवस सोत्साह मनाया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री सोहनलाल शारदा ने की। मुख्य अतिथि डॉ. जितेन्द्र शास्त्री ने अपने प्रवचन में महर्षि दयानन्द के जीवन पर प्रकाश डालते हुए यज्ञ के महत्व और इसके वैज्ञानिक पक्ष को उकेरित किया। इस अवसर पर दैनिक यज्ञ करने वाले महानुभावों का सम्मान किया गया।

- सत्यनारायण तोलम्बिया

हलचल

महाशय धर्मपाल जी (एमडीएच) का ९२ वाँ जन्मदिवस उत्साह पूर्वक सम्पन्न

आर्य जगत् के दानवीर महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त महाशय जी का ९२ वाँ जन्मोत्सव एक विशाल समारोह में भारत वर्ष के मूर्धन्य आर्य नेता

विद्वान् एवं गणमान्य व्यक्तियों के मध्य मनाया गया। सर्वप्रथम आचार्य आनन्द जी के ब्रह्मत्व में यज्ञ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा, गुजरात के प्रधान एवं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान श्री सुरेश अग्रवाल, सार्वदेशिक सभा के मंत्री श्री प्रकाश आर्य, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के उप प्रधान श्री सुरेन्द्र रैली, महामंत्री श्री राजीव आर्य, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य, महामंत्री श्री विनय आर्य, जम्मू कश्मीर सभा के प्रधान श्री भारतभूषण आर्य, झारखण्ड सभा के प्रधान श्री भारतभूषण त्रिपाठी, महाराष्ट्र सभा के प्रधान डॉ. ब्रह्ममुनि, छत्तीसगढ़ सभा के प्रधान श्री अंशुदेव जी, उत्तरप्रदेश सभा के मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी, बिहार सभा के मंत्री श्री रामेन्द्र गुप्ता, कर्नाटक सभा के प्रधान डॉ. राधाकृष्ण, राजस्थान से श्री सोमरत्न आर्य एवं श्री प्रदीप आर्य आदि ने महाशय जी के निरामय दीर्घायुष्य के लिए प्रभु से प्रार्थना करते हुए उनका माल्यार्पण कर अभिवादन किया। इस अवसर पर पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती, स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती (सांसद), स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, स्वामी धर्ममुनि जी, डॉ. स्वामी देवव्रत सरस्वती, साध्वी उत्तमायति जी ने महाशय धर्मपाल जी को शुभाशीष प्रदान की। इस अवसर पर महाशय जी ने ईश्वर का धन्यवाद करते हुए कहा कि प्रभु ने ही मुझे समाज की सेवा करने का सामर्थ्य दिया है। ईश्वर मुझे और शक्ति तथा बल दे कि जिससे मैं आर्य समाज की और अधिक सेवा कर सकूँ।

– विनय आर्य, महामंत्री

११ वाँ आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा ३ मई २०१५ रविवार को आर्य समाज, विवेक विहार, नई दिल्ली में ११ वाँ आर्य परिवार युवक-युवती परिचय सम्मेलन आयोजित किया जा रहा है। इच्छुक जन कार्यालय दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली में शीघ्रातिशीघ्र सम्पर्क करने का श्रम करें।

– अर्जुनदेव चड्ढ़ा, राष्ट्रीय संयोजक

नियुक्ति

आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन के राष्ट्रीय संयोजक श्री अर्जुन देव चड्ढ़ा ने हड़ौती क्षेत्र के लिए श्री रामप्रसाद याज्ञिक को संयोजक व

श्री अरविन्द पाण्डे को सह संयोजक नियुक्त किया है। ३ मई को दिल्ली में आयोजित होने वाले आर्य परिवार युवक-युवती परिचय सम्मेलन के लिए उक्त दोनों अधिकारी सघन प्रचार की जिम्मेदारी लेंगे।

प्रतिस्वर

Dear Shri Ashok Arya Ji, Namaste.

1. Many thanks for your kind mail regarding Satyarth Saurabh, April 2015 issue, an excellent publication. As the editor of Satyarth Saurabh, you deserve my thanks and gratitude for bringing out this superb publication.

2. I shall be grateful to get the telephone number and e-mail ID of Shri Udayanacharya ji, author of Din ko sudin (shubhdin) kaise banavenpublished in Satyarth saurabh, April 2015 issue.

3. It is also suggested that if approved by you, telephone number and e-mail ID of authors, instead of their postal addresses, may kindly be mentioned with the articles in future issues of satyarth Saurabh so that the authors can be contacted for any clarification etc. regarding their articles.

Shubham astu, J.G. Arora

श्री रामनवमी मनाई गई

आर्य समाज, हिरणमगरी, उदयपुर के तत्वावधान में श्री रामनवमी पर्व उदयपुर नगर निगम के महापौर श्री चन्द्रसिंह कोठारी के सान्निध्य में

सोत्साह मनाया गया। इस अवसर पर बोलते हुए श्री कोठारी ने कहा कि श्री राम का जीवन और रामायण दुर्लभ एवं प्रेरणास्पद ग्रन्थ है। भगवान श्री राम में समस्त मर्यादाओं एवं गुणों का समावेश था। ऐसा जीवन संसार के किसी अन्य महापुरुष में देखने को नहीं मिलता। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास के कार्यकारी अध्यक्ष श्री अशोक आर्य ने श्री राम के जीवन के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालते हुए कहा कि श्री राम एक अद्भुत व्यक्तित्व थे जिनमें, किसी भी मानव के जीवन में वेद निर्देशित जितने भी उदात्त गुण हो सकते हैं वे सभी समाहित थे। अगर आज उनके अल्पांश का भी अनुकरण किया जाए तो व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र व विश्व उन्नति के पथ पर चल पड़ेंगे। इस अवसर पर महापौर श्री चन्द्रसिंह कोठारी व हिरणमगरी क्षेत्र के पार्षद श्री लवदेव बागड़ी, श्रीमती अमिता गौड़ व श्रीमती सीमा साहू का आर्य समाज के पदाधिकारियों श्री भंवर लाल आर्य, श्रीमती शारदा गुप्ता, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, श्री के.के.सोनी व श्री प्रेमनारायण जायसवाल द्वारा स्वागत सम्मान किया गया। इस अवसर पर श्री इन्द्रदेव पीयूष एवं श्री विनोद राठौड़ ने श्री राम के जीवन पर आधारित गीत प्रस्तुत किए। श्री अखिलेश ने तबले पर संगत दी। कार्यक्रम का आरम्भ पंडित रामदयाल मेहरा के पौरोहित्य में विशेष यज्ञ के साथ हुआ। समाज की मंत्री श्रीमती ललिता मेहरा ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन श्री भूपेन्द्र शर्मा ने किया।

आर्य समाज , भीमगंजमण्डी, कोटा का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज , भीमगंजमण्डी, कोटा का वार्षिकोत्सव दिनांक १५ से १७ मई २०१५ तक होगा। जिसमें डॉ. पवित्रा वेदालंकार (कन्या गुरुकुल सासनी), प्रख्यात् भजनोपदेशक पंडिता अंजलि आर्या (करनाल) पधार रही है।

– धीरेन्द्र गुप्ता, मंत्री

सत्यार्थ-पीयूष

आधुनिक संदर्भ में वानप्रस्थ आश्रम

गतांक से आगे .....

मानव जीवन यात्रा का तीसरा पड़ाव वानप्रस्थ है। आज मनुष्य ने अपने अज्ञानवश मोहक प्रतीत होने वाले गृहस्थाश्रम को ही अन्तिम पड़ाव समझ लिया है। देखा जाय तो ईश्वरीय व्यवस्था की दृष्टि से गृहस्थ से निकलने के लिए प्रकृति अपने ढंग से संकेत देती है। मनुष्य की शारीरिक शक्ति भोगों को भोगने के लिए समाप्त होने लगती है। नौकरी करने वाले कर्मचारियों को सरकारी विभागों से रिटायर कर दिया जाता है। पुत्र-बहुयें अपने अधिकारों को प्राप्त करना चाहते हैं तथा युवक रोजगार प्राप्त करना चाहते हैं। परन्तु आज के समाज में एक बीमारी उत्पन्न हो गई है कि ६०-७० वर्ष तक भी कोई न तो गृहस्थ आश्रम छोड़ना चाहता है और न सर्विस से रिटायर होना चाहता है। जबकि प्रेय से श्रेय की ओर तथा प्रवृत्ति से निवृत्ति की ओर ले जाने वाली व्यवस्था का नाम ही वानप्रस्थ है। वानप्रस्थ आश्रम व्यवस्था किसी सीमा तक राष्ट्र में आर्थिक एवं बेरोजगारी की समस्या को हल करने में सहायक रहती है।

वानप्रस्थ आश्रम व्यवस्था एक ऐसी परियोजना है कि इसमें अनुभवी एवं ज्ञानी अध्यापकों, इंजीनियरों, डॉक्टरों, वकीलों, ऑफिसरों, प्रोफेसरों आदि का शिक्षा के क्षेत्र में सदुपयोग करके राष्ट्र में अधिक से अधिक शिक्षा का प्रसार-प्रचार किया जा सकता है और इससे अनिवार्य शिक्षा बिना किसी बजट के पूर्ण हो सकती है।

प्राचीन समय में वानप्रस्थ का बहुत अधिक महत्त्व था, इसीलिए समाज के लोग अधिक सुखी सम्पन्न थे। राजा भी राज्य और गृहस्थ को त्याग कर, राज्य और सम्पत्ति को पुत्रों को सौंपकर मुनि वृत्ति को स्वीकार करते थे। इस प्रकार के अनेक प्रसंग प्राचीन साहित्य में उपलब्ध हैं। कालिदास ने रघुवंशियों की विशेषताओं में लिखा है कि वे वृद्धावस्था में मुनि वृत्ति को स्वीकार करते थे। वार्धक्ये मुनिवृत्तीनाम् (रघुवंश १/८) दशरथ ने वृद्ध होने पर, राम को राज्य देकर वनों में जाने का विचार किया था। युधिष्ठिर के राज्यारोहण के बाद धृतराष्ट्र, विदुर, कुन्ती आदि वानप्रस्थी हो गये थे। परीक्षित के युवा होने पर, युधिष्ठिर ने उसको राज्य का भार सौंप दिया और पत्नी तथा भाइयों सहित वनों को चले गये। कालिदास, भवभूति, शक्तिभद्र, दिङनाग, मुरारि, राजशेखर आदि कवियों ने इस वानप्रस्थ का समर्थन किया है। (प्राचीन भारत का सांस्कृतिक इतिहास- डॉ. कृष्ण कुमार, पृ. ४०३-४०४)

वानप्रस्थ का अर्थ वन में प्रस्थान करना है। साथ ही वानप्रस्थी की दिनचर्या और कर्त्तव्यों का उल्लेख किया गया है उससे भी यही सिद्ध होता है कि व्यक्ति को घर छोड़कर वन में चला जाना चाहिए और वहीं रहकर तपस्या कर अपने को संन्यास-आश्रम में प्रवेश करने के योग्य बनना चाहिए, पर आज सामाजिक परिवेश भिन्न है। इस प्रकार शास्त्र में जैसा वानप्रस्थाश्रम का वर्णन है, क्या उसके अनुकूल वर्त्तमान परिप्रेक्ष्य में वैसा वानप्रस्थ घट सकता है? यदि नहीं तो वर्त्तमान सन्दर्भ में वानप्रस्थाश्रम को कौन सा स्वरूप दिया जाए कि वानप्रस्थाश्रम का मूल वैदिक सिद्धान्त भी जीवित रहे और परिवार और समाज को भी वे ही लाभ मिलें या मिलते रहें जो प्राचीनकाल में मिलते थे।

इस विषय में विचार यह है कि प्राचीनकाल के समान आज का मानव-जीवन सादा जीवन और उच्च विचार वाला न रहा, न वनों की स्थिति संतोषजनक रही। अतः वर्त्तमान परिप्रेक्ष्य में वानप्रस्थाश्रम का अर्थ होगा, जब तक गृहाश्रमी को पुत्र का पुत्र अर्थात् पौत्र या पौत्री हो जाए तब अपना समस्त उत्तरदायित्व अथवा गृहस्थी का मुखिया पद अपने

पुत्र और पुत्रवधु को सौंप कर गृहस्थाश्रम से पूरी तरह मुक्त होकर शेष जीवन किसी आश्रम में बिताए और अपने पुत्र-पुत्रियों के समान समाज के सभी पुत्र-पुत्रियों को अपना पुत्र-पुत्री मानकर अपने ज्ञान और अनुभव से उनकी सेवा करे या किसी समाज, संस्था और समिति आदि से जुड़ कर परोपकारार्थ तन, मन और स्वयं के पास धन हो तो धन से निस्वार्थ सेवा करे या यदि स्वयं के पास भरण-पोषण के साधन नहीं हों तो बिना लोभ लालच के अपना जीवन चलता रहे उतना निर्वाह भत्ता लेकर सेवा करे। शेष जीवनचर्या प्राचीनकाल के वानप्रस्थाश्रम के समान ब्रह्मचर्यपूर्वक योगाभ्यास, स्वाध्याय (वेद और वैदिक साहित्य का पठन-पाठन) तपस्या, मिर्च-मसाले रहित सादा भोजन, प्रतिदिन अग्निहोत्र सहित पंचमहायज्ञ, सादे वस्त्रों का पहनना, सादा बिस्तर लगाकर भूमि पर सोना, गौ आदि पशु रक्षा करे।

किसी कारण से यदि आश्रम में रहने की व्यवस्था न हो सके तो घर में भी रहे तो भी ऐसे रहे जैसे घर से दूर आश्रम में ही रह रहे हों। शेष जीवनचर्या वैसी ही हो जैसी ऊपर वर्णित की गई है।

जहाँ तक धर्मपत्नी का साथ रहने का सवाल है तो वानप्रस्थी जैसा जीवन बना कर वह भी वानप्रस्थी पति के साथ रह सकती है। ऐसी स्थिति में दोनों में विषय अर्थात् काम चेष्टा नहीं होनी चाहिए अर्थात् दोनों को पूर्णतः यौनिक संयम से अपना जीवन चलाकर अपने ज्ञान और अनुभव से समाज की निःस्वार्थ भाव से सेवा करनी चाहिए।

सम्पादक- अशोक आर्य, नवलखा महल

क्रेता-विक्रेता

कथा सरित

गधों पर सामान ढो रहा वह आदमी सड़क मार्ग से जा रहा था। किसी ने पूछा-'क्या सामान है भाई, बेचोगे?'

उसने कहा- 'नहीं, शहर में ले जाकर बेचूँगा।'

'सामान क्या है, यह तो बताओ।'

'अलग-अलग गठरियों में अलग-अलग सामान है- किसी पर लदा है अहंकार, किसी पर आचारशिथिलता, किसी पर भ्रष्टाचार, किसी पर बेईमानी, किसी में ईर्ष्या और सबसे आगे जा रहे गधे पर है अनैतिकता।'

'इन चीजों को खरीदेगा कौन?' उस आदमी ने आशंका व्यक्त की। गधे वाले ने कहा- 'तुम कह रहे हो खरीदेगा कौन, यहाँ मैं सप्लाई नहीं कर पा रहा हूँ, इतनी माँग है। शहर वालों से एडवांस दे रखा है, वहीं ले जा रहा हूँ। पहुँचते ही सारा माल हाथों-हाथ बिक जायेगा।'

माल बेचकर गधेवाला वापस लौटा तो फिर वही आदमी मिला। बोला- 'इतना जल्दी बेचकर आ गए। तुम्हारा वह माल तो कई तरह का था। उसके खरीददार कौन-कौन थें? गधे वाले व्यापारी ने कहा- 'चरित्रहीनता को खरीदा शासक वर्ग ने। अहंकार को खरीदा धनी लोगों ने। ईर्ष्या को खरीदा पण्डितों ने और बेईमानी को व्यापारियों ने थोक भाव से खरीद लिया। वेराइटी इस बार कम थी। अगली बार कई नई चीजें लेकर आ रहा हूँ।'

ये चार ऐसे दोष हैं जिनसे अछूता रहना चाहिए। जिसमें ये चार चीजें प्रवेश कर गई, उसका पतन अवश्यंभावी है। हम हर तरह की नकारात्मक प्रवृत्ति के प्रति भी सावधान रहें।

साभार-युवादृष्टि (कथा बोध)

भोजनोपरांत भूलकर भी न करें इन चीजों का सेवन

भोजनोपरान्त कुछ चीजों का खाना सेहत के लिए फायदेमंद होता है तो कुछ का सेवन स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होता है। जैसे भोजन के बाद थोड़ा-सा गुड़ का सेवन खाना पचाने में मददगार है। खाने के पश्चात् सौंफ, इलायची व मिश्री का सेवन भी सेहत के लिए मददगार है। कुछ लोगों को भोजन के पश्चात् फल खाने की आदत होती है। इससे पेट में वायु बनती है। फल को भोजन खाने से एक घण्टा पूर्व या दो घंटे बाद लेना चाहिए।

चाय न पिएँ

चाय की पत्ती में अम्ल की मात्रा अधिक होती है जिससे भोजन में उपस्थित प्रोटीन सख्त हो जाता है। और उसका पाचन कठिन हो जाता है अतः भोजन के पश्चात् चाय का सेवन कदापि न करें।

ठंडा पानी न पियें

वैसे तो भोजन के उपरान्त पानी पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है पर आवश्यकता पड़ने पर बीच में थोड़ा कम तापमान वाला पानी पी सकते हैं। ठंडा पानी तो बिल्कुल नहीं पीना चाहिए क्योंकि खाना खाने के बाद शरीर का तापमान अधिक होता है। यदि हम ठंडा पानी पियेंगे तो वह हमारे स्वास्थ्य को नुक्सान पहुँचाएगा। शरीर के लिए वैसे गुनगुना या गर्म पानी ही लाभप्रद होता है। इससे हमारे शरीर के बुरे टॉक्सिन पेशाब के जरिए बाहर निकल जाते हैं और हमें जाने-अन्जाने कितनी बीमारियों से दूर रखते हैं।

धूम्रपान न करें

बहुत से लोग खाना खत्म करने के तुरन्त पश्चात् सिगरेट सुलगा लेते हैं। खाना खाने के तुरन्त बाद धूम्रपान करना भी सेहत को खराब करता है। खाने के बाद एक सिगरेट दिन भर की १० सिगरेट के बराबर नुकसान पहुँचाती है। **{धूम्रपान कभी भी करना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। -संपादक}**

खाने के बाद स्नान न करें

इससे टाँगों, हाथों और शरीर में खून का प्रवाह बढ़ जाता है और पेट के आसपास यह कम हो जाता है जो हमारे स्वास्थ्य और पाचनतंत्र को हानि पहुँचाता है।

सोना नहीं

खाना खाने के तुरन्त बाद सोने से खाना सही ढंग से नहीं पचता। तुरन्त सोने से गैस्ट्रिक समस्या पैदा होती है। रात्रि भोजन और सोने के बीच दो से तीन घंटे का अन्तराल होना जरूरी है। दिन के खाने के बाद थोड़ी-सी झपकी सेहत के लिए अच्छी मानी जाती है।

विचार
नजरें बदली तो नजारे बदल जायेंग

गिलास आधा भरा है या आधा खाली है। बात एक ही है पर दो अलग मनोवृत्तियों को दर्शाती है। सुख-दुःख स्थिति पर-स्थिति पर नहीं मनःस्थिति पर निर्भर है।

कुछ लोगों की आदत उपस्थिति-परिस्थिति का अच्छा पक्ष देखने के बजाय, उसका बुरा पक्ष देखने की होती है। इस नजरिये को बदलिये। अच्छा जीवन बदल जायेगा। उदाहरण के लिए रोविन्सन क्रूसो की कहानी को लिया जा सकता है। एक बार उसका जहाज एक रेतीले द्वीप पर फँस गया। उसे जिन्दा रहने के उपाय ढूढ़ने थे। उसने परिस्थितियों के अनुसार अच्छाई और बुराई दोनों की सूचियाँ बनाई।

उसने लिखा-

१. मैं इस सुनसान द्वीप पर फँसा हूँ, जो कि बुरा है, पर मैं जीवित हूँ- यह अच्छा है।

२. मैं बिल्कुल अकेला हूँ, यह बुरा है, पर मैं भूखा नहीं हूँ यानि भूख से नहीं मर रहा हूँ, यह अच्छा है।

३. मेरे पास कपड़ा नहीं है, पर यहाँ गर्मी की वजह से मुझे कपड़ों की आवश्यकता नहीं है।

४. यहाँ मेरे पास बात करने के लिए कोई भी नहीं है, पर जहाज पर बुनियादी जरूरतों का सामान मौजूद है। मैं उसे ला सकता हूँ।

सूची बना लेने के बाद उसने फैसला किया कि कोई भी परिस्थिति इतनी बुरी नहीं होती कि उसमें परमात्मा का कृतज्ञ होने का कोई भी कारण न मिले। हर किसी परिस्थिति में व्यक्ति में अच्छाई-बुराई दोनों होती है। अच्छा पक्ष देखने से ऐसे में हम हताश होने के बजाय आशावान बनें और प्रभु की कृपा का धन्यवाद करें- यही वेद और स्वामी दयानन्द का संदेश है।

- नानक चन्द लोहिया
आर्य समाज, हल्द्वानी, चलभाष- ०९४१२०३६३६०

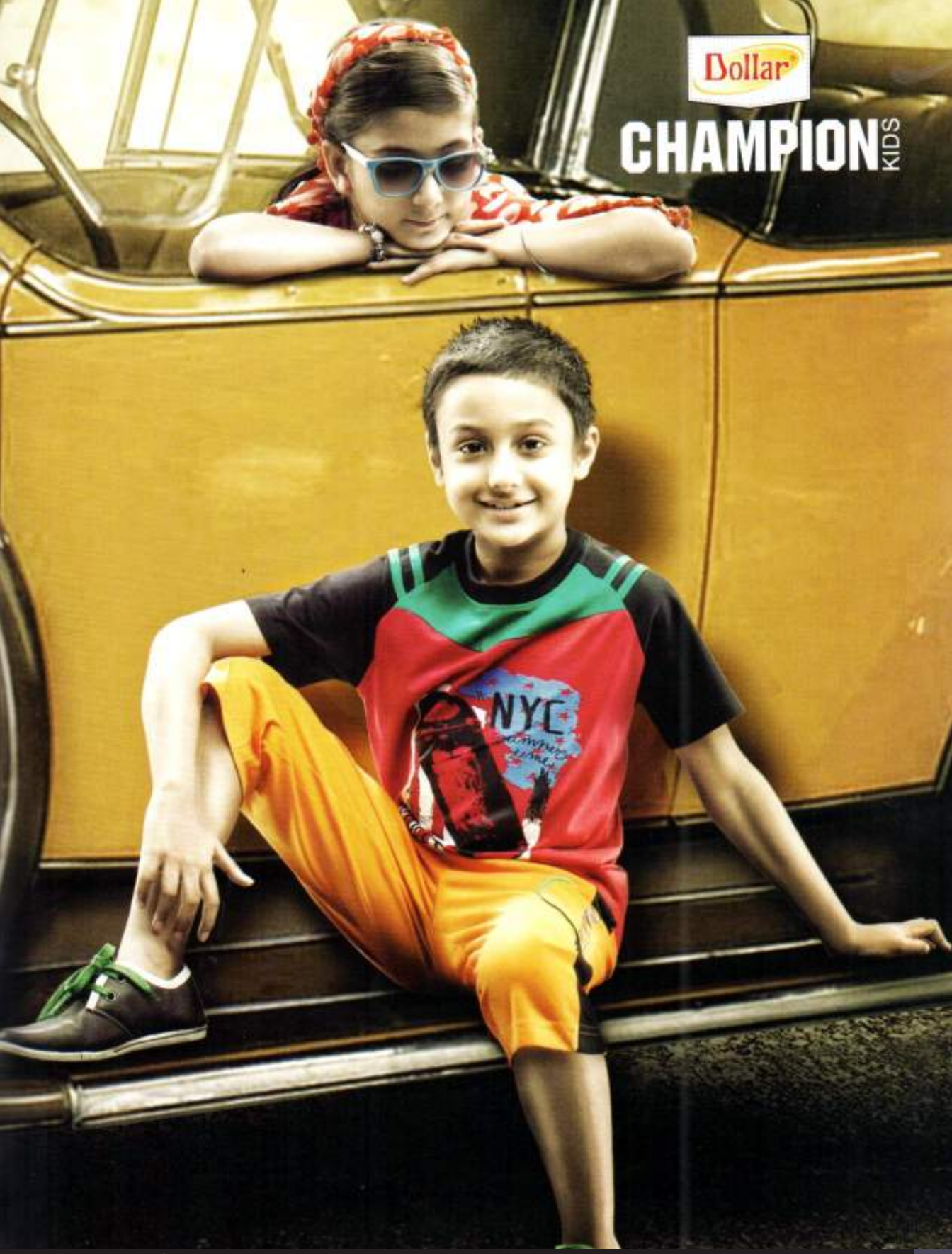
Dollar
CHAMPION KIDS
NYC

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 May-2015 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2013-2015

महर्षि दयानन्द सरस्वती

जैसे माता सन्तानों पर प्रेम, उनका हित करना चाहती है, उतना अन्य कोई नहीं करता।

सत्यार्थप्रकाश- पृ. २८

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य